भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 | **जून-जुलाई** 2005 | **अंक** 6-7

किताबें कुछ जानना चाहती हैं

क्या आप अपने-आपको एक गम्भीर पाठक मानते हैं ? अखबारों के अलावा क्या आप नियमित रूप से दिन का कुछ समय पढ़ने का खर्च करते हैं ? यदि आप लेखक हैं तो आपके निजी पुस्तकालय में खुद की खरीदी हुई कितनी किताबें हैं और कितनी आपको भेंट में या समीक्षार्थ मिली हैं ? यदि आप माँगकर किताबें पढ़ते हैं तो किताबें पढ़कर क्या आप नियमित रूप से उन्हें उसके मालिक को लौटाते हैं या कि कोई दूसरा उन्हें आपके यहाँ से उठा ले जाता है ? यदि दूसरे आपसे किताबें माँगकर पढ़ते हैं तो क्या आप उन माँगने वाले मित्रों को 'ब्लैकलिस्ट' करते हैं, जो पढ़ने के बाद किताबें नहीं लौटाते ? पढ़ी गयी महत्त्वपूर्ण किताबों के बारे में क्या आप अपनी डायरी में नोट्स बनाते और दूसरों को उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं ? किताबों की समीक्षा पढ़कर क्या कभी आप उन्हें खरीदने के लिए प्रोत्साहित होते हैं ? यदि नहीं, तो आप स्वयं अपनी पसंदीदा किताबों की ऐसी समीक्षाएँ क्यों नहीं लिखते ? क्या आप दूसरों की या पुस्तकालय से ली गयी किताबों को रेखांकित कर उन्हें खराब करना गलत समझते हैं ?

❑ ❑ ❑

स्कूल-कॉलेज की किताबों से इतर आपके बच्चे क्या पढ़ते हैं ? कोर्स की किताबों के अलावा पिछले एक साल में आपने उन्हें कितनी किताबें खरीदकर दी हैं ? यदि आपके घर में हिन्दी बोली जाती है तो क्या आपने अपने बच्चों को हिन्दी की किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित किया है ? क्या आपने कभी अपने बच्चों को पुस्तकालय या किताबों की दुकान पर ले जाकर किताबें देखने के लिए खुला छोड़ा है ? पढ़ी गयी किताबों को लेकर आपकेऔर आपके बच्चों के बीच क्या कभी संवाद की स्थिति आती है ? क्या आपने कभी अपनी पसन्द का गद्य या कविता अपने बच्चों को पढ़कर सुनाई है ? पाठ्य पुस्तकों में पढ़ी गयी पसंदीदा रचनाएँ बच्चों के दिमाग में हमेशा के लिए अंकित हो जाती हैं। क्या आपने कभी उनकी पाठ्य पुस्तकें खोलकर उनकी पसन्द-नापसंद जानने की कोशिश की है ? और क्या आपने बच्चों की पसंदीदा रचनाओं के लेखकों की अन्य कृतियाँ उन्हें दिलवाने की कोशिश की है ? टीवी पर अथवा सिनेमाघरों में दिखाई जाने वाली साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों के बहाने क्या आपने बच्चों को उनकी मूल कृतियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया है ? क्या आपकी आलमारी में अपने बड़े होते बच्चों के पढ़ने लायक कुछ किताबें हैं ?

—जितेन्द्र भाटिया

इतिहास की निर्ममता

इतिहास कितना निर्मम होता है। पाकिस्तान में आडवाणीजी के भाषण ने सोये जिन्न को जगा दिया। इतिहास का समुद्र-मंथन आरम्भ हो गया। विष और अमृत दोनों के लिए संघर्ष शुरू हो गया। इतिहास को राजनीतिक प्रतिबद्धताओं में देखा जाने लगा। जिस सहजता से इतिहास प्रवाहित होता है उसे धारणाएँ और पूर्वग्रह नये अर्थ प्रदान करने का प्रयास करती हैं।

वास्तविकता यह है कि अंग्रेजों के ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप में भारत प्रवेश, भारतीय जनता का विद्रोह, विद्रोह का दमन, शासन, संघर्ष, 15 अगस्त 1947 की आजादी और देश विभाजन, इनका वस्तुनिष्ठ इतिहास नहीं लिखा गया। जिस दल को सत्ता प्राप्त हुई उसने इतिहास को यथासम्भव व्यक्तिसापेक्ष अथवा सत्तानिष्ठ बनाने का प्रयास किया। इतिहास की पुस्तकों से कितने क्रान्तिकारियों को आतंकवादी और लुटेरे घोषित किया गया। जब-जब सत्ता बदली इतिहास भी बदलता रहा। देश के बालक-बालिका और युवा के समक्ष देश के इतिहास का वास्तविक स्वरूप आज भी नहीं है। देश का अतीत आज के सन्दर्भ में महत्त्वहीन हो गया है। अतीत से अलग वर्तमान की अस्मिता नहीं होती। वर्तमान को जानने के लिए अतीत में झाँकने की अपेक्षा होती है। यह उपयुक्त अवसर है जब विगत शताब्दी के इतिहास को वस्तुनिष्ठ स्वरूप में प्रगट करें। दल, विचार, प्रतिबद्धता सभी से मुक्त सभी विचारधारा के इतिहासकारों को बैठकर देश का राष्ट्रीय इतिहास तैयार करना चाहिए।

इतिहास को व्यक्ति सापेक्ष, दल सापेक्ष या सत्ता सापेक्ष बनाना देश हित में नहीं है। साम्प्रदायिकता, धर्मनिरपेक्ष, अल्पसंख्यक, आरक्षण जातिवाद इन सबसे देश को मुक्त करने की आवश्यकता है, देश का विकास इसी में निहित है।

देश विभाजन के लिए हम आपस में एक-दूसरे को दोषी ठहरायें, आरोप-प्रत्यारोप लगायें, इसकी अपेक्षा विभाजन में अंग्रेजों की भूमिका स्पष्ट कर देश के सामने वास्तविकता रखनी चाहिए। किस प्रकार अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति से देशी राज्यों का विघटन किया और देश की जनता के सौहार्द को नष्ट किया। इसे जाने बिना देश में राष्ट्रीयता का बोध नहीं आयेगा। अन्त में इतिहास की निर्ममता और इसके कटु सत्य को भी स्वीकारना होगा तभी बर्लिन की दीवार टूटने का स्वप्न देख सकेंगे।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

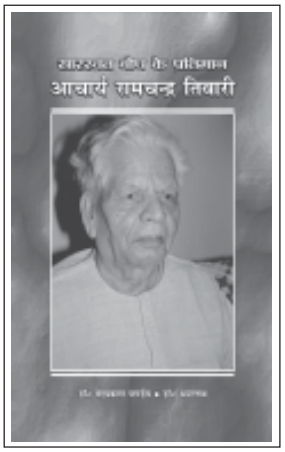

सारस्वत बोध के प्रतिमान
आचार्य रामचन्द्र तिवारी

4 जून 2005 को आचार्य रामचन्द्र तिवारी ने 81 वर्ष पूर्ण कर 82वें वर्ष में प्रवेश किया। इस अवसर पर गोरखपुर विश्वविद्यालय में तिवारीजी के शिष्यों तथा प्रशंसकों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित ग्रन्थ 'सारस्वत बोध के प्रतिमान : आचार्य रामचन्द्र तिवारी' का लोकार्पण किया। लोकार्पण समारोह का शुभारम्भ किसान पी०जी० कालेज, सेवरही के प्राचार्य एवं लोकार्पित ग्रन्थ के सम्पादक डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय के उद्‌बोधन से हुआ। मुख्य अतिथि राजनीतिक चिंतक प्रो० रामकृष्णमणि त्रिपाठी ने कहा—''आचार्य रामचन्द्र तिवारी व्यक्तिगत जीवन के साथ लेखन में भी ईमानदार हैं। वह एक ऐसे आलोचक हैं जो कभी किसी खूँटे से नहीं बँधे। उनसे तुलनात्मक साहित्य का रस प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति का मैं सम्मान करता हूँ।'' विशिष्ट अतिथि विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के पूर्व अध्यक्ष तथा उच्च शिक्षा आयोग के अध्यक्ष प्रो० प्रताप सिंह ने कहा—सारस्वत बोध ही शाश्वत बोध है, यह अपने आप नहीं मिलता, दिया जाता है। आचार्य तिवारी ऐसे सद्‌भावी हैं कि उनसे मिलने पर व्यक्ति उनका प्रिय बन जाता है।

विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो० जयप्रकाश ने कहा—ज्ञान व साहित्य के क्षेत्र में प्रो० तिवारी का योगदान अतुलनीय है।

समारोह के अध्यक्ष गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० अरुणकुमार ने कहा—डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने अपने कृतित्व, व्यक्तित्व एवं रचनाधर्मिता से न सिर्फ हिन्दी विभाग, वरन् समूचे विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया है।

ग्रन्थ के सहयोगी सम्पादक कलकत्ता विश्वविद्यालय के आचार्य एवं अध्यक्ष डॉ० अमरनाथ ने कहा—आचार्य तिवारी के मूल्यांकन के लिए यह कृति पर्याप्त नहीं है, क्योंकि उनका व्यक्तित्व और रचनाधर्मिता इस कृति के आगे भी है। उन्होंने सभी आगतों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

इस समारोह में ग्रन्थ के प्रकाशक तथा डॉ० रामचन्द्र तिवारी के 55 वर्षों के सहयोगी मित्र पुरुषोत्तमदास मोदी की ओर से उनके पुत्र परागकुमार मोदी ने आचार्य तिवारी को अंगवस्त्रम् के साथ सरस्वती का प्रतीक चिह्न अर्पित किया।

सारस्वत बोध के प्रतिमान
आचार्य रामचन्द्र तिवारी
प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी
मूल्य : 250.00

'सारस्वत बोध के प्रतिमान : आचार्य रामचन्द्र तिवारी' का लोकार्पण करते हुए डॉ० प्रताप सिंह, कुलपति डॉ० अरुणकुमार, डॉ० रामचन्द्र तिवारी, डॉ० जयप्रकाश गुप्ता तथा डॉ० रामकृष्णमणि त्रिपाठी

परागकुमार मोदी द्वारा सारस्वत बोध के प्रतिमान, सरस्वती के साधक, सरस्वती सदन के निवासी, सरस्वती पति आचार्य तिवारी को सरस्वती का प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए

डॉ० रामचन्द्र तिवारी की प्रमुख कृतियाँ

- हिन्दी का गद्य साहित्य
- शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य
- कबीर मीमांसा
- आलोचक का दायित्व
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश
- हिन्दी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार
- आधुनिक हिन्दी आलोचना : सन्दर्भ एवं दृष्टि
- योग के विविध आयाम
- कथा राम कै गूढ़
- कबीर और भारतीय संत साहित्य
- हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ
- कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ

लोकार्पण

'अक्षरा' के हीरक अंक का लोकार्पण

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल की द्वैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'अक्षरा' के 75वें हीरक जयंती अंक का लोकार्पण वरिष्ठ साहित्यकार पद्मभूषण **श्री विष्णु प्रभाकर** ने किया। उन्होंने कहा—वर्तमान में हिन्दी में पाठकों की नहीं स्तरीय पत्रिकाओं की कमी है जो अच्छा साहित्य पढ़ने रुचि रखने वाले पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर सके। आज लोग साहित्यिक पत्रिकाओं के साथ किताबें भी पढ़ते हैं। इसी कारण हमारा साहित्य गतिमान है।

नवोदित साहित्यकारों के प्रति वरिष्ठ साहित्यकारों के रवैये का जिक्र करते हुए कहा कि जब उन्होंने लिखना शुरू किया था और 'हंस' पत्रिका में उनकी कहानी प्रकाशित हुई थी तब जैनेन्द्रजी एक दिन कड़कती ठंड में मेरा पता पूछते हुए मेरे घर पहुँच गये थे। नये रचनाकारों के प्रति वरिष्ठ साहित्यकारों का ऐसा सहृदय व्यवहार नितान्त आवश्यक है।

प्रारम्भ में 'अक्षरा' के प्रधान सम्पादक श्री कैलाशचन्द्र पन्त ने पत्रिका की 22 साल की प्रकाशन-यात्रा के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। पत्रिका के सम्पादक श्री विजयकुमार देव ने पत्रिका के सम्पादन से जुड़े पक्षों पर अपने विचार रखें। हीरक अंक के अतिथि सम्पादक एवं प्रख्यात व्यंग्यकार डॉ० ज्ञान चतुर्वेदी ने कहा कि 'अक्षरा' का यह 75वाँ अंक प्रख्यात व्यंग्यकार स्व० श्री रवीन्द्रनाथ त्यागी पर केन्द्रित है। इस अंक में त्यागीजी की सभी रंगों की रचनाओं को शामिल करने का प्रयास किया गया है।

डॉ० रामकुमार वर्मा का एकांकी सार

महामहिम उपराष्ट्रपति **श्री भैरोसिंह शेखावत** ने सुपरिचित साहित्यकार डॉ० सोमदत्त शर्मा की सद्य प्रकाशित कृति 'डॉ० रामकुमार वर्मा का एकांकी संसार' का लोकार्पण करते हुए कहा कि आज देश में सामाजिक सामंजस्य की आवश्यकता है। लेखकों और चिन्तकों का कार्य है कि समाज को जोड़ें और समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के लिए अपनी रचनाओं में समाधान दें। पुस्तकें पठन-पाठन के लिए होती हैं, दुर्भाग्य से आज अधिकांश पुस्तकें पुस्तकालय की शोभा ही बढ़ाती हैं।

दरार

'दरार' उपन्यास का लोकार्पण करते हुए डॉ० बच्चन सिंह

''कथाकार रामावतार का पाँचवां उपन्यास 'दरार' राष्ट्रवादी चेतना के धरातल पर सृजित सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं की जटिलता को रेखांकित करने वाली एक उत्कृष्ट कृति है। इस उपन्यास पर जैनेन्द्र शैली की स्पष्ट छाप है।''

यह उद्‌गार ख्यातिलब्ध साहित्य समालोचक एवं कथाकार **डॉ० बच्चन सिंह** ने 'समकालीन सोच परिवार' गाजीपुर के तत्वावधान में आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि उपन्यास का नायक पल्टूराम स्वाधीनता आन्दोलन का एक तेजस्वी एवं साहसी क्रान्तिकारी है। उसके जीवन का पूर्वार्द्ध स्वाधीनता प्राप्ति के लिए किए गये संघर्षों और कड़ी यातनाओं का जीवन्त मिसाल है। लेकिन स्वाधीनता के बाद पारिवारिक समस्याओं की मकड़जाल में फँसकर वह इतना दब्बू और कायर बन जाता है कि उस पर संकीर्ण सोच वाली गँवार और अनपढ़ पत्नी भारी पड़ जाती है। पल्टूराम परिवार को सम्पन्न और आत्मनिर्भर बनाने के चक्कर में कितने ही मुखौटे बदलता और अपने लोगों के साथ विश्वासघात करता है। पर वह कभी सफल नहीं होता और उसके सपने चकनाचूर हो जाते हैं।

प्रख्यात कथाकार **डॉ० विवेकी राय** ने कहा कि रामावतार के उपन्यासों के पढ़ने से ऐसा लगता है कि उनके अन्दर का मौलिक साहित्यकार प्रचुर अनुभवों को समेटे हुए यथार्थ के धरातल पर राष्ट्र तथा समाज की ज्वलन्त समस्याओं को मुखरित करने के लिए बेचैन है। इनके नवसृजित उपन्यास 'दरार' में आजादी की लड़ाई में क्रान्तिकारियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका और आजादी के बाद उनके पराजित पारिवारिक जीवन मूल्यों, अन्तर्द्वन्द्वों और अन्तर्कलहों का जीवन्त चित्रण हुआ है।

प्रखर साहित्य समालोचक और समाजवादी चिन्तक **डॉ० पी०एन० सिंह** ने कहा कि रामावतार का अद्यतन उपन्यास 'दरार' पिछले उपन्यासों से दो कदम आगे है। इसमें उनके साहित्य बोध का विकास हुआ है। इस उपन्यास में एक क्रान्तिकारी के संघर्षपूर्ण और पारिवारिक जीवन की विसंगतियों की पड़ताल की गयी है। इस उपन्यास को पढ़ने पर लगता है कि इसके नायक पल्टूराम की तरह हर आदमी दरारों के बीच अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश है।

'कला समय'

मशहूर शायर और फिल्म संवाद लेखक पद्मश्री **जावेद अख्तर** ने राजधानी (भोपाल) से प्रकाशित बहुप्रतिष्ठित सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' के नये अंक का लोकार्पण किया। समकालीन रंगमंच के विविध आयामों पर एकाग्र इस अंक में नाटक के अलावा संगीत, सिनेमा, चित्रकला और साहित्य से जुड़े जरूरी मुद्दों पर जाने-माने संस्कृतिकर्मियों ने अपने विचार साझा किये हैं। श्री अख्तर ने 'कला समय' के सम्पादक श्री विनय उपाध्याय को इस अनूठी प्रस्तुति के लिए साधुवाद दिया।

'संकल्प रथ'

जांजगीर, छत्तीसगढ़ से रामअधार द्वारा सम्पादित 'संकल्प रथ' के छत्तीसगढ़ी-हिन्दी के गीतकार पं० विद्याभूषण मिश्र पर प्रकाशित विशेषांक का लोकार्पण शील साहित्य परिषद के तत्वावधान में भाषाविद् **डॉ० विनयकुमार पाठक** ने किया।

'समय के सवाल'

नई दिल्ली में प्रताप सहगल की नवप्रकाशित कृति 'समय के सवाल' का लोकार्पण **श्री जोगिन्दर पाल** ने किया। लोकार्पण समारोह में महीप सिंह, रामदरश मिश्र, डॉ० नरेन्द्रमोहन, डॉ० प्रेम जनमेजय, प्रभाकर श्रोत्रिय प्रभृति अनेक साहित्यकार उपस्थित थे। डॉ० नरेन्द्रमोहन ने कहा कि प्रतापजी ने अपने साहित्य से मिथक और इतिहास की अन्तर्यात्रा करते हुए वर्तमान समय के ज्वलंत सवालों को हमेशा उठाया है—आर्यभट्ट और भगत सिंह जैसे पात्र इसके उदाहरण हैं।

सागर-प्रिया का लोकार्पण

बायें से : श्री राजेन्द्र जोशी, श्री स्वदेश भारती, डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, डॉ० इन्द्रनाथ चौधरी एवं श्री केदारनाथ सिंह

स्वदेश भारती द्वारा लिखित महाकाव्य 'सागर-प्रिया' का लोकार्पण हिन्दी भवन, नई दिल्ली में **डॉ० केदारनाथ सिंह** द्वारा किया गया। राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, दिल्ली शाखा द्वारा आयोजित इस लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता **डॉ० इन्द्रनाथ चौधरी** ने की तथा संचालन **डॉ० गंगाप्रसाद विमल** ने। अकादमी के मानद अध्यक्ष **डॉ० रत्नाकर पाण्डेय** ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह दिल्ली का सौभाग्य है कि 'सागर-प्रिया' का प्रकाशन कोलकाता में हुआ किन्तु उस पर पहली चर्चा दिल्ली में हो रही है। अकादमी की

ओर से डॉ० पाण्डेय ने भारतीजी को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

स्वदेश भारती ने कहा कविता कभी मरेगी नहीं। संस्कृति का आधार हमारी अभिव्यक्ति है और अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम कविता है। आज की कविता में सम्प्रेषणीयता नहीं है, कवि कविता के साथ आज पूरा साक्षात्कार नहीं कर पाता, इसलिए पाठक उससे कट जाता है। मानव जीवन को उद्वेलित करनेवाले जो प्रश्न हैं—प्रेम का, नश्वरता का, अनवरता का—उसको ग्रहण करके आज तक पहुँचा जा सके यही मेरा प्रयास है। सागर-मंथन आज भी हो रहा है। तेल और गैस सागर से ही निकलता है। जहाँ तक चन्द्रमा के स्त्री-रूप का प्रश्न है, पुराणों में भी चन्द्रमा का स्त्री-रूप है जिसे शंकर के जटाजूट में हम पा सकते हैं।

अपने अध्यक्षीय भाषण में **डॉ० इन्द्रनाथ चौधरी** ने एक पौराणिक आख्यान को महाकाव्य का रूप देने के लिए श्री भारती की प्रशंसा की और कहा कि इससे काव्य-विधा के प्रति लोगों का झुकाव बढ़ेगा। इस अवसर पर 'सागर-प्रिया' से सम्बन्धित कुछ दृश्य-चित्रों को भी प्रदर्शित किया गया।

कैलाश मानसरोवर यात्रा की यादें

कैलाश मानसरोवर यात्रा इस वर्ष जून के पहले सप्ताह में शुरू हो रही है। इसी सन्दर्भ में 11 मई 2005 को नयी दिल्ली में 'कैलाश मानसरोवर यात्रा की यादें' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए प्रसार भारती के मुख्य कार्यकारी अधिकारी **श्री के०एस० सरमा** ने लेखिका **श्रीमती चन्द्रकला शफीक** के प्रयासों की सराहना की। सुप्रसिद्ध लेखिका **श्रीमती चित्रा मुद्गल** समारोह की मुख्य अतिथि थीं। आकाशवाणी में सहायक समाचार सम्पादक श्रीमती चन्द्रकला शफीक ने 2002 में की गयी अपनी कैलाश मानसरोवर यात्रा के संस्मरणों का वर्णन बड़ी ही सरल और सुबोध भाषा में किया है। इस दुर्गम यात्रा में आने वाली कठिनाइयों और यात्रा के बारे में दी गयी जानकारी कैलाश मानसरोवर जाने वाले यात्रियों के लिए काफी उपयोगी हो सकती है।

चित्रकार रजा की पुस्तक का लोकार्पण

पिछले कई दशकों से पेरिस में रहकर कला साधना कर रहे भारतीय चित्रकार **सैयद हैदर रजा** की आत्मकथात्मक अंग्रेजी पुस्तक 'पैशन : लाइफ एण्ड आर्ट ऑफ रजा' का लोकार्पण 'एलायंस फ्रांसेस द देल्ही' की गैलरी में प्रसिद्ध रंगकर्मी **हबीब तनवीर** ने किया। इस अवसर पर रजा ने बड़ी संख्या में उपस्थित चित्रकारों, साहित्यकारों और रंगकर्मियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसी भी कला के सृजन के लिए एकाग्रता अनिवार्य है। भारतीय चित्रकला के वर्तमान परिदृश्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय कलाकारों को आज उन देशों में भी स्वीकृति मिल रही है जो पश्चिमी कला के गढ़ माने जाते हैं।

आज का सत्य

पटना जंक्शन के एक नम्बर प्लेटफार्म पर स्थित 'नालंदा विहार' के सभाकक्ष में कथाकार तथा रेल अधिकारी श्री मदनमोहनप्रसाद के प्रथम कहानी-संग्रह 'आज का सत्य' का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ कथाकार मिथिलेश्वर ने कहा—''मदनमोहनप्रसाद का प्रथम कहानी-संग्रह 'आज का सत्य' लेखकीय अनुभवों का साक्ष्य है। मदन बाबू ने जैसा देखा, भोगा और महसूस किया है उसे पूरी ईमानदारी के साथ व्यक्त किया है।''

रेल कर्मचारी की इस कथा कृति के लोकार्पण के अवसर पर वरिष्ठ रेल अधिकारी श्री दिनेशकुमार शर्मा के साथ प्रमुख साहित्यकार सर्वश्री ब्रजकुमार पाण्डेय, विश्वरंजन, कर्मेन्दु शिशिर, अनिल विभाकर, वेदप्रकाश पाण्डेय, अरुण शीतांश, सीताराम शर्मा (सम्पादक : 'रेलवाणी') तथा अनेक कवि, कथाकार उपस्थित थे। रेल कर्मचारी की कृति का लोकार्पण रेलवे स्टेशन परिसर में हुआ, यह लेखक और रचना दोनों की सार्थकता है।

लोकार्पण तथा काव्य समारोह

काव्य-समारोह में डॉ० कन्हैया सिंह की पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए उ०प्र० हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष श्री सोम ठाकुर

आजमगढ़ में 11 जून 2005 को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की स्थानीय इकाई भारतीय साहित्य संगम द्वारा एक अखिल भारतीय काव्य-समारोह का आयोजन किया गया जिसमें उ०प्र० हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष श्री सोम ठाकुर ने अध्यक्षता की तथा डॉ० कन्हैया सिंह की सद्य: प्रकाशित चार पुस्तकों—पूर्वी उत्तर प्रदेश के संत कवि, आधुनिक कविता-सांस्कृतिक परिवेश, अट्ठारह सौ सत्तावन का स्वतंत्रता संग्राम तथा आचार्य चन्द्रबली पांडे का लोकार्पण किया। समारोह के प्रारम्भ में सर्वश्री सोम ठाकुर, श्रीपाल सिंह 'क्षेम', डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र, विमल साकेती और दीनानाथ श्रीवास्तव की अंगवस्त्रम् भेंट करके सारस्वत सम्मान किया गया। तत्पश्चात लगभग दो दर्जन कवियों के काव्य पाठ से हरिऔध की काव्य-धरती रातभर गूँजती रही। सोम ठाकुर, क्षेमजी, विमल साकेती, बुद्धिनाथ मिश्र के अतिरिक्त विनम्रसेन सिंह, भालचंद तिवारी, प्रखर जौनपुरी, पंकज गौतम, आशा सिंह, शैला, प्रेमलता द्विवेदी, शिवप्रसाद शर्मा अम्बु आदि ने काव्य पाठ किया।

हमारे विशिष्ट पुस्तकालय-1

इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर लाइब्रेरी

देश-विदेश की संस्कृति, सामाजिक स्थिति एवं राजनीति के विभिन्न पहलुओं को जानने की उत्कंठा प्रत्येक के मन में होती है। खासकर तब, जब आप किसी खास मकसद के लिए इन वैकल्पिक विषयों पर शोध कर रहे हों। ऐसे में ऐसी खास लाइब्रेरी का महत्त्व बढ़ जाता है जहाँ इन विषयों की किताबें खासतौर पर होती हैं। राजधानी में डिप्लोमेटिक गतिविधियों का पर्याय बने इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर में ऐसी ही एक लाइब्रेरी है जिसे इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर लाइब्रेरी कहते हैं।

संग्रह : लगभग 34 हजार पुस्तकें इतिहास, जीवनी, साहित्य एवं कला पर उपलब्ध हैं। लगभग 700 दुर्लभ किताबों का यहाँ महत्त्वपूर्ण कलेक्शन है, जिसे विलग्रामी कलेक्शन कहा जाता है। इसमें दो विशेष कलेक्शन हैं—'इण्डिया कलेक्शन' एवं 'हिमालयया कलेक्शन'। इण्डिया कलेक्शन में भारत की लगभग 25 हजार पुस्तकें 17वीं शताब्दी से 1947 तक की हैं। हिमालया कलेक्शन में 550 पुस्तकों का संग्रह है, जो हिमालय के पौधों एवं पुष्प, ट्रैवेल एवं माउंटेनियरिंग विषयों पर आधारित है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की 150 पीरियॉडिकल्स एवं समाचारपत्र भी यहाँ उपलब्ध हैं।

पूर्व राज्यपाल तथा केन्द्रीय मंत्री तथा अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री जगमोहन** प्रतिदिन लगभग 8 घण्टे इस पुस्तकालय में अध्ययन और लेखन करते हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का पत्र
खड्गविलास प्रेस के मालिक बाबू रामदीन सिंह के नाम

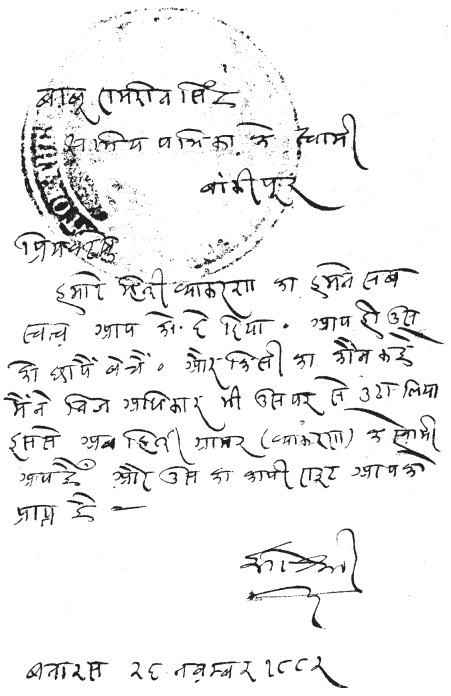

यत्र-तत्र-सर्वत्र

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

गीत-संध्या

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने अपने साहित्यिक कार्यक्रमों की शृंखला में 16 मई 2005 को 'गीत-संध्या' कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष **डॉ० मुकुंद द्विवेदी** ने की। इस अवसर पर गीतकार श्री किशन सरोज, श्री माहेश्वर तिवारी और श्री भारतभूषण ने अनेक प्रेरणादायी गीतों की प्रस्तुति की। इस कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा ने किया।

विद्यापति के गीत-संगीत

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने अपने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में 25 जून 2005 को विद्यापति के गीत-संगीत, गीतों पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम की परिकल्पना भारतीय संगीत एवं नृत्य के परिचित और कथक केन्द्र के पूर्व निदेशक डॉ० गंगेश गुंजन ने की।

कार्यक्रम के अध्यक्ष **डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी** ने अपने वक्तव्य में कहा कि विद्यापति मिथिला के कवि हैं लेकिन हिन्दी ने उनको कभी अपने से अलग नहीं माना। विद्यापति भारतीय साहित्य और संस्कृति के महान स्तम्भ हैं।

कार्यक्रम के निदेशक **डॉ० गंगेश गुजन** ने कहा कि विद्यापति शास्त्र से लोक की ओर गए हुए कवि हैं। गोसाईं की तरह विद्यापति के पद आज भी मिथिलांचल के अतिरिक्त हिन्दी प्रदेशों में गाये जाते हैं। विद्यापति की संगत एवं स्वर लिपि प्राचीन है।

श्री हरिनाथ ने विद्यापति के पद 'जय-जय भैरवी असुर भयावनी, पशुपति भामिनी माया' की संगीत में गायन प्रस्तुति से की। उन्होंने विद्यापति की शृंगार रस से सम्बन्धित अन्य रचनाओं में 'अरे-अरे भमरा तोहे हित हमरा, बाउंसी अनह गजगामिनी रे' और 'माधव हम परिनाम निरासा' से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया इस प्रस्तुति की संगीत संरचना जनाब अमजद अली की थी।

कार्यक्रम की अगली प्रस्तुति **श्रीमती मालती श्याम** के कथक नृत्य निर्देशन में विद्यापति के पद 'माधव करिए सुमुखि समधाने तोउ अभिसार करलि जाति सुन्दरी कामिनी करके आये' की संगीतमय प्रस्तुति के साथ कथक नृत्यांगनाएँ **सुश्री शैलजा बिष्ट, किम किम जंग, मीनाक्षी शर्मा** और **पुनीता शर्मा** ने की।

श्री ओमप्रकाश आदित्य का एकल काव्य-पाठ
वरिष्ठ हास्य कवि एवं पत्रकार गोपालप्रसाद व्यास को समर्पित

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने 30 मई 2005 को हास्य व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर श्री ओमप्रकाश आदित्य का एकल काव्य पाठ कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध हास्य व्यंग्य कवि **श्री सुरेन्द्र शर्मा** ने की। कार्यक्रम का संचालन कवि एवं गीतकार **डॉ० धनंजय सिंह** ने किया। इस अवसर पर वर्ष 98-99 के अकादमी के सर्वोच्चसम्मान शलाका सम्मान से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार पं० गोपालप्रसाद व्यास के चित्र पर अतिथियों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें मौन श्रद्धांजलि दी गई।

श्री सुरेन्द्र शर्मा ने पं० व्यास को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि साहित्यकार साहित्य के आठ रस मानते थे लेकिन पं० व्यास ने साहित्य में नौंवे रस हास्य रस को मानद कराया और हास्य रस जो पियादे की तरह था, उसे राजा जैसा सम्मान दिलाया। हास्य रस के बादशाह का सम्भवत: पहला विश्व रिकार्ड होगा जिन्होंने जीवन के अन्तिम साँस तक पत्रकारिता की सेवा की।

पं० व्यास के अनन्य शिष्य **श्री ओमप्रकाश आदित्य** ने अपने काव्य और साहित्य गुरु पं० व्यास को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पं० व्यास अपने आप में हास्य रस के चलते-फिरते महाविद्यालय थे। उनकी शिष्य परम्परा बहुत लम्बी है। उन्होंने हास्य रस को आगे बढ़ाने के लिए अपने शिष्यों को आगे बढ़ाया। वे प्रतिभाओं की खोज कर उन्हें प्रोत्साहित करने का अवसर पैदा करते हैं।

'सागर-प्रिया' पर साहित्य-संगोष्ठी

जीरकपुर, चण्डीगढ़ (पंजाब) की साहित्यिक संस्था 'साहित्य संगम' की ओर से **स्वदेश भारती** के सद्य: प्रकाशित महाकाव्य 'सागर-प्रिया' पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें पंजाब के कई क्षेत्रों से चर्चित लेखक एवं विद्वान सम्मिलित हुए थे। गोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध आलोचक **डॉ० रमेश कुंतल मेघ** ने की तथा संचालन **डॉ० ज्ञानचंद शर्मा** ने। इस अवसर पर श्री भारती को शाल, पुष्प गुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया। चर्चा की शुरुआत करते हुए **श्री यशपाल वैद्य** ने कहा कि कवि ने सागर, धरती और चन्द्रिमा का जो प्रतीक लिया है वह परम्पराओं से हटकर है। आज प्रकृति में जो विसंगतियाँ हैं वे ही मनुष्य जीवन में भी है, इस बात को कवि ने रेखांकित किया है। **श्री अरुण आदित्य** ने कहा कि महाकाव्य विधा लुप्त हो रही थी जिसे भारतीजी ने अपनी कृति से बचाया है। परन्तु उन्होंने चाँद को प्रिया के रूप में प्रस्तुत कर एक खतरा उठाया है कयोंकि चाँद को स्त्री के रूप में हमारे यहाँ नहीं लिया जाता। कवि ने यह भी दिखाया है कि सत्ता की, प्रतिपक्ष की जो स्थिति तब थी, सागर मंथन के समय, वैसी ही आज भी है। इस कृति की भाषा भी आकर्षित करती है, साथ ही महाकाव्य जैसी विधा को पठनीय बनाती है।

श्री सुभाष रस्तोगी ने कहा कि सागर, धरती और चन्द्रमा इस महाकाव्य के तीन बिन्दु हैं, जिसे हम मिथ से भी जोड़ सकते हैं। मिथ हमारा अतीत होता है। आज की समस्याओं का समाधान आदमी अतीत में ही खोजता है। वर्तमान क्षणिक है, भविष्य हमने देखा नहीं, इसलिए अतीत और मिथ का प्रयोग आज भी महत्त्व रखता है।

धूमिल और कविता

समकालीन कविता में धूमिल की कविता की राजनीतिक चेतना सबसे अधिक मुखर है। धूमिल सहज भाषा के माध्यम से समकालीन विसंगतियों पर प्रहार किया। उक्त बातें साहित्य अकादमी भवन (दिल्ली) में पिछले दिनों धूमिल विशेषांक का लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि कथाकार **कमलेश्वर** ने कही। उन्होंने कहा कि जैसे-जैसे समय बीतता जायगा, धूमिल की कविता आम आदमी के करीब होती जायगी।

समीक्षक **प्रोफेसर परमानन्द** ने धूमिल के सम्बन्ध में अनेकों संस्मरण सुनाते हुए उनकी भाषा वक्रता एवं व्यंग्य पर विशेष ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि धूमिल की कविताएँ अपने लिखे व्यंग्य के लिए हमेशा याद की जायगी। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में **प्रोफेसर विश्वनाथ त्रिपाठी** ने कहा कि धूमिल की कविता कबीर के बाद सीधे धूमिल के पेशे से जुड़ी हुई शब्दावली के कविता को जोड़ने का काम किया। जिस प्रकार भक्त कवियों में कबीर ने अपनी जुलाही पेशे की शब्दावली के माध्यम से ईड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, माया, ब्रह्म, जीव आत्मा-परमात्मा आदि गूढ़ विषयों पर लिखा, उसी प्रकार धूमिल ने नट-बोल्ट, कलछुल, बटलोही, रोटी, संसद, लोकतन्त्र, समाजवाद आदि विषयों पर अपनी टिप्पणी की और नये मुहावरों का सृजन किया। **डॉ० सुरेश्वर त्रिपाठी** ने धूमिल की कविता को दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश की छटपटाहट कही। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी **डॉ० ओम निश्चल** ने किया।

कई विश्वविद्यालय मिल कर देंगे संयुक्त डिग्री

कोलकाता, मुम्बई और चेन्नई विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को संयुक्त रूप से उपाधियाँ देंगे। शोध कार्यक्रमों का साझा किया जाएगा तथा पुस्तकालयों को इंटरनेट के माध्यम से आपस में जोड़ा जाएगा। इन विश्वविद्यालयों ने स्थापना के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की उपस्थिति में हस्ताक्षरित सहमतिपत्र के अनुसार ये विश्वविद्यालय संयुक्त उपाधियों और पुस्तकालयों को इंटरनेट से जोड़ने के अतिरिक्त मुम्बई, चेन्नई और कोलकाता में मराठी, तमिल और बांग्ला भाषाओं के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों की तलाश के लिए विभिन्न पीठ बनाएंगे। विश्वविद्यालय विभिन्न तकनीकों, संसाधनों और शिक्षकों का साक्षा करेंगे। इस मौके पर 150 छात्रवृत्तियों की भी घोषणा की गई। यह कदम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश के उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता बढ़ाने और राष्ट्रीय स्तर पर आपसी सहयोग की संस्कृति विकसित करने में मददगार होगा।

कबाड़ में ज्ञान

मुम्बई के फुटपाथों पर पिछले 35-40 वर्षों से रोजाना किताबों का विशाल बाजार लगता रहा है। यह बाजार गरीब तथा मध्यवर्गीय छात्रों को बड़ी

दुकानों से कम कीमत पर जरूरत की पुस्तकें उपलब्ध कराता है। लेकिन महानगरपालिका ने अवैध कब्जे के नाम पर पुस्तक बाजार पर धावा बोलकर लाखों पुस्तकें जब्त कर लीं। इनमें गाँधी, नेहरू, मार्क्स, लेनिन, अम्बेडकर के साथ-साथ गीता, रामायण, बाइबिल की किताबें भी थीं। ये किताबें कहाँ हैं ? गोदामों में लदी पड़ी हैं। धूल खा रही हैं। श्री रतनलाल जोशी जब 'नवनीत' का सम्पादन कर रहे थे, इसी कबाड़ बाजार में उन्हें महत्त्वपूर्ण और रोचक रचनाओं के लिए सामग्री मिलती थी।

हिन्दी संयुक्त राष्ट्र की सरकारी भाषा

केन्द्र सरकार ने हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र का आधिकारिक भाषा बनाने पर विचार करने के लिए विदेश राज्यमंत्री राव इंद्रजीत सिंह की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है। सरकार ने हिन्दी को विदेश में लोकप्रिय बनाने के लिए योजना के तहत भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद (आईसीसीआर) ने दस देशों के विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिन्दी के प्रोफेसरों को नियुक्त किया है। पोलैंड, हंगरी, बुल्गारिया, दक्षिण कोरिया, त्रिनिडाड और टोबैगो, रोमानिया, तुर्की, चीन, सूरीनाम में ऐसे प्रोफेसर नियुक्त हुए हैं। कई देशों में 15 भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना हो गयी है जिनका प्रारम्भिक कार्य भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है।

'जन्मकुण्डली' पर संगोष्ठी

रमाशंकर श्रीवास्तव के उपन्यास 'जन्म-कुण्डली' पर आयोजित संगोष्ठी की हिन्दी-उर्दू के प्रख्यात साहित्यकार **श्री देवेन्द्र इस्सर** ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वरिष्ठ लेखक डॉ० रामदरश मिश्र थे। डॉ० नरेन्द्रमोहन, प्रो० डॉ० सादिक, योगिरत्न डॉ० शशिभूषण मिश्र, श्रीमती अलका सिन्हा, डॉ० ज्ञानचंद गुप्त, प्रमोद तिवारी, डॉ० राहुल, डॉ० रामसुरेश पाण्डेय, डॉ० रमाकान्त शुक्ल, डॉ० पवन माथुर, डॉ० राज भारद्वाज, विनोद बंसल एवं महेशप्रसाद आदि ने 'जन्म कुण्डली' की कथावस्तु, विशेषताओं पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणियाँ प्रस्तुत कीं।

डॉ० रामदरश मिश्र ने कहा कि 'जन्मकुण्डली' में अनंत प्रसंग हैं, असंख्य पात्र हैं। फिर भी लेखक अपने इस अठारहवें उपन्यास में नयी बात कह रहा है। इस उपन्यास का केन्द्र है महेश-परिवार की कथा। इस कथा में हम अपने जीवन को देख रहे हैं। यही इस उपन्यास की ताकत है।

मेरे जीने के लिए सौ की उमर छोटी है

अब मुझे किसी यश की आकांक्षा तो है नहीं, धन की भी मुझे ज्यादा दरकार नहीं है, सब कुछ तो मिल चुका, वही बहुत है। हाँ मैं शान्ति से अपनी आत्मकथा का चौथा खण्ड पूरा कर सकूँ, इतनी तो मोहलत और एकान्त ईश्वर से और चाहता हूँ।

—विष्णु प्रभाकर

12 जून 2005 को 94 वर्ष में प्रवेश

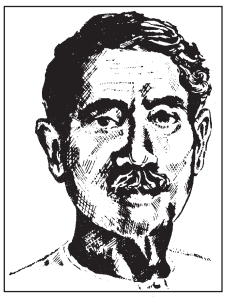

प्रेमचंद की सवा सौवीं जयन्ती

प्रेमचंद-शोध की वास्तविक स्थिति के विषय में अधिकारपूर्वक कुछ कहना इसलिए भी कठिन है, क्योंकि अभी तक न तो प्रेमचंद-विषयक कोई प्रामाणिक सन्दर्भ-ग्रन्थ अपनी पूर्णता में प्रस्तुत हो सका है, और न इस दिशा में कुछ व्यक्तियों के अपूर्ण प्रयास के अलावा कोई व्यवस्थित संस्थागत प्रयास दृष्टिगत होता है। उनकी सवा सौवीं जयन्ती के इस वर्ष में इस दिशा में जो प्रयास किये जा सकते हैं उनकी एक सांकेतिक सूची इस प्रकार बन सकती है।

1. प्रेमचंद के जन्म-ग्राम लमही में एक स्मारक-भवन ऐसा बनना चाहिए जैसा यूरोप और अमेरिका जैसे देशों में वहाँ के साहित्यकारों के लिए बनाये गये हैं। ऐसे विदेशी स्मारकों के बारे में इण्टरनेट पर प्रचुर जानकारी उपलब्ध है।

2. साहित्य अकादमी, दिल्ली को एक ऐसा वेबसाइट खोलना चाहिए जिस पर साहित्यकारों के विषय में अधिकाधिक जानकारी उपलब्ध हो। इसी वर्ष से प्रेमचंद पर पूरी जानकारी उपलब्ध कराने की व्यवस्था होनी चाहिए।

3. केन्द्रीय सरकार को दिल्ली में एक ऐसा स्वतंत्र साहित्यिक संस्थान स्थापित करना चाहिए जहाँ हिन्दी साहित्य के इतिहास, उसकी ग्रन्थ-सम्पदा, उसके साहित्यकारों के जीवन एवं कृतित्व आदि पर दृश्य एवं श्रव्य सामग्री की व्यवस्था हो ताकि स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटकों के लिए वह एक आकर्षक पर्यटन स्थल बन जाये। इस प्रेमचंद जयन्ती वर्ष में इसका शुभारम्भ किया जा सकता है।

4. साहित्य अकादमी की वेबसाइट पर देश-विदेश में विभिन्न संस्थानों के अथवा व्यक्तिगत संग्रहालयों में उपलब्ध महत्त्वपूर्ण शोध-सामग्री के विषय में सूचनाएँ उपलब्ध कराने की व्यवस्था होनी चाहिए। यह काम इस वर्ष प्रेमचंद-सामग्री से ही प्रारम्भ किया जा सकता है।

5. विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभागों द्वारा प्रथम प्रयास में प्रेमचंद से संबद्ध कई प्रकार की शोध-सन्दर्भ सूचियाँ 'प्रोजेक्ट' के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदानों के अन्तर्गत बनवाने का कार्य इसी वर्ष से प्रारम्भ किया जा सकता है—

प्रेमचंद के उर्दू में लिखित-प्रकाशित सम्पूर्ण लेखन, उसके प्रेमचंद द्वारा हिन्दी में पुनर्लेखन, या किसी दूसरे के द्वारा उसके लिप्यंतरण का तिथिवार सूचीकरण और साथ ही उर्दू में उन पर लिखित समालोचनात्मक सामग्री का भी सूचीकरण।

प्रेमचंद के पूरे लेखन में से अन्य भारतीय भाषाओं एवं विदेशी भाषाओं में अनूदित साहित्य का अद्यतन सम्पूर्ण प्रामाणिक सूचीकरण।

प्रेमचंद द्वारा हिन्दी अथवा उर्दू में अनूदित सामग्री का सूचीकरण।

प्रेमचंद पर उर्दू साहित्य के प्रभाव पर विशेष शोध-कार्य।

प्रेमचंद की भाषा में उर्दू-हिन्दी के समन्वयात्मक पक्ष पर भाषा-वैज्ञानिक शोध-कार्य।

प्रेमचंद पर हुए सम्पूर्ण शोध-प्रबन्धों की एक अलग सूची का साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशन।

विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभागों द्वारा होने वाले इस प्रकार के कार्यों में साहित्य अकादमी के साथ समन्वय होना अच्छा होगा। **—मंगलमूर्ति**

पुत्र, स्व० शिवपूजन सहाय

किताब से असुरक्षा

सुरक्षा के नाम पर सुरक्षाधिकारी हर वस्तु को शक की निगाह से देखते हैं। उनकी दृष्टि में ऐसा नहीं कहा जा सकता कि व्यावहारिक पक्ष का अभाव होता है पर कभी-कभी कुछ ऐसा ही लगता है। गत दिनों दिल्ली में केन्द्रीय मानव संसाधनमन्त्री अर्जुन सिंह के अमृत महोत्सव के अवसर पर उन पर लिखी पुस्तक 'अर्जुन सिंह : व्यक्तित्व और कृतित्व' के लोकार्पण का कार्यक्रम हो रहा था। यह पुस्तक आठ खण्डों में है। उद्घोषक ने खण्ड की प्रतियाँ इंका अध्यक्ष सोनिया गाँधी और प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह को भेंट करने की घोषणा की। कुछ क्षण तक मंच पर पुस्तक का पता नहीं चला। लोग व्यग्र हो पुस्तक की ओर निगाह लगाये रखे, तभी यह सूचना दी गयी कि सुरक्षाकर्मियों ने ग्रन्थ का सेट मंच पर नहीं लाने दिया, अत: ग्रन्थ दोनों नेताओं की कार में रखवा दिया गया है, सरकार के लिए यह पुस्तक कहीं खतरा न बन जाय।

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, बेंगलूर

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, बेंगलूर का 40वाँ दीक्षांत समारोह, 18 जून 2005 को सम्पन्न हुआ। डॉ० बालेश्वर सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने दीक्षांत भाषण दिया। मुख्य अतिथि थे श्री धरम सिंह, मुख्यमंत्री, कर्नाटक तथा श्री रामलिंग रेड्डी। अध्यक्षता की डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने।

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल के बाईसवें स्थापना दिवस पर ज्येष्ठ पत्रकार श्री जवाहरलाल राठौड़ को 'लाल बलदेवसिंह सम्मान' से विभूषित किया गया। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि थे—प्रो० आर०एस० सिरोही, कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, अध्यक्ष थे—प्रो० एम०सी० गुप्ता, कुलपति, राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी वि०वि० भोपाल और विशेष अतिथि थे—डॉ० कमलाकर सिंह कुलपति, भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल तथा श्री पंकज राग, संचालक, जनसम्पर्क मध्यप्रदेश शासन, भोपाल।

सम्मान-पुरस्कार

कल्याणमल लोढ़ा को 'मूर्तिदेवी पुरस्कार'

प्रख्यात विद्वान् एवं चिंतक श्री कल्याणमल लोढ़ा को उनकी पुस्तक 'वाग्विभव' के लिए वर्ष 2003 के 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' से पुरस्कृत किया जाएगा। यह पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रदान किया जाता है। पुरस्कार-स्वरूप श्री लोढ़ा को एक लाख रुपये नकद, प्रशस्ति-पत्र, शॉल व श्रीफल प्रदान किया जाएगा। पुरस्कृत कृति 'वाग्विभव' में लेखक ने कर्म, पुनर्जन्म, मोक्ष, प्राण, भक्ति, श्रद्धा, काम और नीति जैसे भारतीय चिंतन के मूल तत्त्वों पर व्यापक दृष्टि डाली है। यह ग्रन्थ चिन्तन की व्यापकता के साथ भाषा-सौष्ठव और विचार की गरिमा का अनुभव कराता है। अनेकानेक दार्शनिकों और विचारकों के मतों का विवेचन और विश्लेषण करते हुए लोढ़ाजी भारतीय चिन्तन को आगे बढ़ाते प्रतीत होते हैं। इस सारगर्भित कृति में एक तरह से उन्होंने भारतीय संस्कृति के सार तत्त्वों को निचोड़कर रख दिया है। भारतीय मनीषा का यह नवोन्मेष बहुत प्रीतिकर और विद्वत्तापूर्ण है। 'वाग्विभव' विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित है। विश्वविद्यालय प्रकाशन से लोढ़ाजी की प्रकाशित अन्य पुस्तकें—वाग्द्वार, वाक्सिद्धि तथा वाग्दोह। लोढ़ाजी ने 28 सितम्बर 1986 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य पद से अवकाश ग्रहण किया था। उस समय उनके शिष्यों ने उनके प्रति श्रद्धास्वरूप 'वाग्धारा' ग्रन्थ प्रस्तुत किया था। 1990 ई० में इस ग्रन्थ का प्रकाशन भी विश्वविद्यालय प्रकाशन ने किया था। इस ग्रन्थ में काव्य, नाटक, कथा-साहित्य और इतिहास से सम्बन्धित विषयों पर साहित्य के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों का उद्घाटन हुआ है। 'वाक्पथ', 'वाग्मिता', 'इतस्तः' एवं 'प्रसाद : सृष्टि व दृष्टि' लोढ़ाजी की प्रमुख कृतियाँ हैं।

प्रा० सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत' को मानद उपाधियाँ

बीड़ (महाराष्ट्र) से प्रकाशित होनेवाली व स्व० मायाराम सुरजन ग्रामीण पत्रकारिता पुरस्कार प्राप्त पत्रिका मासिक 'लोक यज्ञ' के सम्पादक प्रकाशक प्रा० सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत' को 'मानव रत्न' व 'सम्पादक रत्न' मानद उपाधियाँ प्राप्त हुई हैं।

विगत चार वर्षों से महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र से 'अक्षत'जी सीमित संसाधनों में खुद के जेब से रुपया लगाकर 'लोक यज्ञ' जैसी राष्ट्रीय और स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन कर निस्वार्थ भावना से महाराष्ट्र व भारत में हिन्दी भाषा का प्रचार और प्रसार कर रहे हैं। उनकी इस निस्वार्थ भावना से की हुई हिन्दी सेवा को देखकर अखिल भारतीय साहित्य कला परिषद संचालित अन्तरर्राष्ट्रीय सम्मानोपाधि महाविद्यालय, कप्तानगंज, कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) ने उन्हें 'मानवरत्न' तथा 'सम्पादकरत्न' मानद उपाधि से समालंकृत किया है।

शैलेश मटियानी स्मृति पुरस्कार

शीर्षस्थ कथाकार स्वर्गीय शैलेश मटियानी की स्मृति में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने युवा कथाकारों के प्रथम कहानी संग्रह को पुरस्कृत करने हेतु एक पुरस्कार प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। प्रथम वर्ष 2005 का पुरस्कार समिति द्वारा आगामी अगस्त महीने में हिन्दी भवन में आयोजित होने वाली बारहवीं पावस व्याख्यानमाला के अवसर पर प्रदान किया जायेगा।

गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम (यू०के०) के संस्थापक अध्यक्ष डॉ० कृष्ण कुमार के सहयोग से स्थापित 'श्रीमती चित्राकुमार पुरस्कार' के अन्तर्गत हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कहानी संग्रह के लेखक युवा कथाकार को 5001 रुपये की पुरस्कार राशि, शाल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह प्रदान की जायेगी। पुरस्कार के लिए कहानी संग्रह का चयन म०प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा गठित की गई पाँच सदस्यीय निर्णायक समिति करेगी।

साहित्यकार श्री श्याम विद्यार्थी

मंच पर डॉ० वसुन्धरा मिश्रा एवं कवि सनतकुमार दास

राजश्री स्मृति न्यास कोलकाता के तत्वावधान में इलाहाबाद दूरदर्शन के निदेशक एवं वरिष्ठ साहित्यकार, काव्यशिल्पी श्री श्याम विद्यार्थी को पश्चिम बंग बांग्ला अकादमी के जीवनानन्द सभागार में 'राजश्री सम्मान' से विभूषित किया गया। संस्थापक श्री जगदीशप्रसाद साहा ने न्यास की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। साहित्यकार श्यामलाल उपाध्याय ने श्री श्याम विद्यार्थी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक आलेख प्रस्तुत किया। श्रीमती गुलाब वैद्य ने स्वागतगान, ज्ञानदास ज्ञानी ने रोली अक्षत, श्यामलाल उपाध्याय ने अंगवस्त्र, सत्यनारायण सिंह 'आलोक' ने श्रीफल, सौरभ चौधरी ने लेखनी एवं मुश्ताक अंजुम ने समृद्धि का सदुपयोग पुस्तक प्रदान की।

स्मृति शेष

नारदजी के उद्घोषक गोपालप्रसाद व्यास नहीं रहे

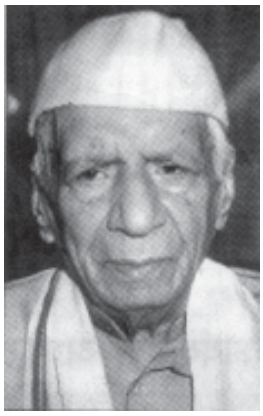

45 वर्षों से 'हिन्दुस्तान' में नारदजी खबर लाये हैं शीर्षक से प्रति सप्ताह हास्य व्यंग्य प्रस्तुत करने वाले वरिष्ठ साहित्यकार **पं० गोपालप्रसाद व्यास** का 28 मई 2005 को 92 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। 45 वर्ष की अवस्था में ही उनकी नेत्र-ज्योति चली गयी थी। वे बोलकर लिखवाते थे। हिन्दीभाषा के लिए व्यासजी का योगदान स्मरणीय है। दिल्ली के हिन्दी भवन के निर्माण में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

ब्रजभाषा के मर्मज्ञ विद्वान व्यासजी की प्रमुख कृतियाँ हैं—कदम कदम बढ़ाए जा, हास्य सागर, कहो व्यास कैसी कटी, मोहि ब्रज बिसरत नाहिं, व्यास के हास-परिहास। इस प्रकार की 50 कृतियाँ व्यासजी की हैं। 'हिन्दी की आस्थावान पीढ़ी' व्यासजी की अन्तिम पुस्तक है। व्यासजी पद्मश्री, शलाका सम्मान और यश भारती जैसे सम्मान से सम्मानित थे। यश भारती सम्मान पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह ने प्रदान किया था।

उन्होंने राजर्षि अभिनन्दन ग्रन्थ, गाँधी हिन्दी दर्शन और ब्रज विभव जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन किया।

उनके निधन से हिन्दी के एकनिष्ठ सेवक और सांस्कृतिक हास्य-व्यंग्यकार का स्थान रिक्त हो गया, जिसका विकल्प नहीं है।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम तीन दशक का दृश्य

शूद्र चाकरी करते हैं, उन्हें पढ़ाई-लिखाई आदि से मतलब नहीं। कायस्थ फारसी-उर्दू पढ़ा करते हैं और वैश्य अक्षर समूह सीखाकर बही-खाता करते हैं। खत्री बजाजी आदि करते हैं, पढ़ते-लिखते नहीं और ब्राह्मणों ने तो कलियुगी ब्राह्मण बनकर पठन-पाठन को तिलांजलि दे रखी है। फिर हिन्दी का समाचार कौन पढ़े और खरीदे ?

—'उदन्त मार्तण्ड'

30 मई 1826 को प्रथम अंक
3 दिसम्बर 1827 को अन्तिम अंक

आपका पत्र

'वाङ्मय' के प्रकाशन के प्रारम्भिक अंक से लेकर मई 2005 तक के प्राय: सभी अंकों में 'पुस्तकों के महत्त्व, 'पुस्तकों के न खरीदे जाने की चिन्ता', 'पढ़े-लिखे समाज द्वारा पुस्तकों पर नगण्य व्यय', 'पुस्तकें विरासत हैं' आदि-आदि महत्त्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाशक की चिन्ता उचित प्रतीत होती है। सुधी पाठकों एवं मनीषियों की प्रतिक्रियाओं ने भी शिक्षित समाज को 'वाङ्मय' के माध्यम से आत्ममूल्यांकन करने हेतु सकारात्मक प्रभाव डाला है। इसके लिए निश्चितरूप से 'वाङ्मय' को बाणभव माना जा सकता है। एक अनौपचारिक भेंट में मैंने प्रो० बच्चन सिंहजी से उन्हीं के आवास पर कहा था कि काशी में श्री पुरुषोत्तमदास मोदीजी ने 'वाङ्मय' को प्रकाशित करके एक सचमुच साहित्यिक सेवा की है। विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी को इसके लिए साधुवाद देता हूँ, क्योंकि 'वाङ्मय' संक्षेप में गुणवत्तासम्पन्न दृष्टिकोण से सचेष्ट साहित्यसेवियों तथा अन्य बौद्धिकों को पर्याप्त सामग्री तो समर्पित करती ही है, साथ ही साथ पारस्परिक सम्पर्क सूत्र स्थापन का भी काम कर रही है।

हाँ, एक प्रश्न जो मूलरूप से विचारणीय है, उस पर गहन चिन्तन एवं तथ्यपरक शोध दोनों की आवश्यकता है, और वह है 'प्रकाशित हो रही पुस्तकों की आन्तरिक सामग्री की गुणवत्ता का स्तर क्या है ?' इस पर विचार करना अन्य सभी सम्बन्धित चिन्ताओं से अधिक महत्त्वपूर्ण है। पुस्तकों की बेशुमार भरमार शिक्षा संस्थाओं की गुणोत्तर वृद्धि के कारण हुई है, परन्तु किसी भी गम्भीर शिक्षक तथा किसी भी अन्य शिक्षित व्यक्ति के लिए इससे बड़ी चिन्ता की बात और कोई नहीं हो सकती कि आज छपने वाली पाठ्य-पुस्तकों में से 80 प्रतिशत से अधिक मानकहीन ही नहीं अपितु अशुद्ध है। पाठ्य-पुस्तकों से अलग प्रकार की भी पुस्तकों यथा—विश्वकोश तथा सन्दर्भ साहित्य आदि का बाजारू प्रवृत्ति से लिखना तो ज्ञान-सम्पदा के साथ राष्ट्रद्रोही कदम है। यह आत्ममन्थन एवं आत्मविवेचन का प्रश्न है। दोषी लेखक एवं प्रकाशक दोनों हैं। अधिकांश साहित्यिक पुस्तकें सर्वहितकारी दृष्टिकोण से रची ही नहीं जा रही हैं, अपितु स्वहितकारी निमित्त हेतु ही छापी जा रही हैं। 'पुस्तकों' की गुणवत्ता पर वाङ्मय के माध्यम से बहस आगे बढ़ेगी, ऐसी अपेक्षा है। **— प्रो० हरिकेश सिंह**

शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' से प्रमाणित होता है कि हिन्दी के साहित्य सेवियों की कमी नहीं है। हिन्दी साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिये अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएँ काम कर रही हैं, यह हिन्दी के लिए शुभ-संकेत है। यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि श्री श्यामपलट पाण्डेय ने 'सर्वोत्तम साहित्य पुरस्कार' 11,000/- रुपये की सम्मान राशि सुनामी पीड़ितों के लिये वहीं मंच पर दान कर दी। भारतीय वाङ्मय के प्रथम पृष्ठ पर पुस्तकों के पठन के प्रति अभिरुचि पैदा करने वाली कविताएँ, टिप्पणियाँ आदि होती हैं जो प्रेरणा देती हैं। सम्पादकीय समसामयिक है। **— डॉ० हरेराम पाठक**

डिगबोई महिला महाविद्यालय
डिगबोई - 786 171 (असम)

'भारतीय वाङ्मय' का अप्रैल अंक मिला। सदैव की भाँति समपूर्ण जानकारी पूर्ण है।

तरक्की चाहिए तो पढ़ो किताबें पढ़कर सुखद अनुभव हुआ। जैसे मैक्सिको सीटी ने अपनी छवि सुधारने के लिए पुलिस को किताब पढ़ने के लिए कहा, यह एक नया सुझाव है। यदि यह आदेश हमारे देश के राजनेताओं, सांसदों, विधायकों और शिक्षकों पर लगा दिया जाए तो मैं समझता हूँ कि इनकी सोच में काफी परिवर्तन आ जाएगा। पुस्तकें विचारों को स्वच्छ, परिष्कृत तथा नये पथ बताती हैं। है कोई ऐसा देश का प्रखर-प्रबुद्ध सत्ताधारी जो ऐसे नियम बनाए।

— यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

बीकानेर

संस्कृत-कवि-हृदयम्
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

प्रकाशक
विश्वभारती अनुसंधान परिषद
ज्ञानपुर, (भदोही)-221 304

मूल्य : 75.00

डॉ० द्विवेदी संस्कृत भाषा तथा साहित्य के अप्रतिम विद्वान् हैं। इस पुस्तक में संस्कृत के 32 महाकाव्यकारों, नाटककारों, कवियों, गीति-काव्यकारों, ऐतिहासिक काव्यकारों, कथा ग्रन्थकारों यथा—वाल्मीकि कालिदास, भास, दण्डी, कल्हण, विष्णु शर्मा आदि 32 रचनाकारों पर पद्यात्मक सूक्तियाँ हैं। यह अपने विषय की एकमात्र पुस्तक है। संस्कृत साहित्य के अध्येताओं के लिए पठनीय एवं संग्रहणीय।

राप्ती तट का इतिहास
विजयपाल सिंह

वितरक
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 250.00

सभ्यता का विकास नदियों के समानान्तर हुआ। राप्ती उत्तर प्रदेश की प्रमुख नदी है। श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, कबीरनगर और गोरखपुर में प्रवाहित है।

इस समस्त भूभाग का भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण इस पुस्तक की विशेषता है। किसी क्षेत्र विशेष पर लिखी गयी यह प्रामाणिक पुस्तक है। कोशल शक्ति का उदय, बुद्ध का काल, राजवंश, राप्ती तट के ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक स्थल, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, साहित्य, धर्म, सम्प्रदाय तथा लोग सभी पर विस्तार से विचार किया गया है। पुस्तक में अनेक दुर्लभ चित्र हैं जो विषय की प्रामाणिकता को सिद्ध करते हैं।

डॉ० राजबली पाण्डेय ने लगभग 75 वर्ष पूर्व गोरखपुर का इतिहास लिखा था जो अप्राप्य है। यह पुस्तक उस कमी को दूर करते हुए गोरखपुर जनपद का अद्यतन इतिहास प्रस्तुत करती है। ऐसी पुस्तक प्रत्येक जनपद पर लिखी जानी चाहिए। श्री सिंह वरिष्ठ व्यापारकर अधिकारी हैं, उनकी इस रचना का स्वागत है।

शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार
डॉ० के०पी० पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-425-4
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 250.00

संत रज्जब
डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-424-6
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 150.00

निरामिष आहार
जगदीश्वर जोहरी

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-902534-7-6
अनुराग प्रकाशन वाराणसी

मूल्य : 200.00

भारत के महान योगी भाग 11-12
विश्वनाथ मुखर्जी

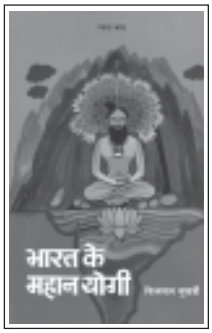

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-902534-8-4
अनुराग प्रकाशन वाराणसी

मूल्य : 100.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी-221001

प्रमुख प्रकाशन

इतिहास, कला और संस्कृति

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Varma* 300.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
Life in Ancient India *Dr. Mahendra Pratap Singh* 100.00
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति सजिल्द 250.00
प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर अजिल्द 125.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा *डॉ० लल्लनजी गोपाल* 150.00
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला *डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी* *डॉ० कमल गिरि* 150.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण (7वीं शती से 13वीं शती) '' 325.00
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला सजि. 200.00
डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव अजि. 140.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क सजिल्द 400.00
डॉ० आर० गणेशन अजिल्द 250.00
एक विश्व : एक संस्कृति *डॉ० ब्रजवल्लभ द्विवेदी* 150.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ *डॉ० श्रीराम गोयल* 50.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ सजिल्द 250.00
डॉ० श्रीराम गोयल अजिल्द 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन) *प्रो० ए०के० नारायण* 300.00
दक्षिण-पूर्व एशिया *डॉ० शैलेन्द्रप्रसाद पांथरी* 30.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* सजि. 300.00
अजिल्द 180.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* सजि. 350.00
अजिल्द 200.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-1) सजिल्द 150.00
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त अजिल्द 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-2) सजिल्द 120.00
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त अजिल्द 80.00
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* सजिल्द 150.00 अजिल्द 100.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के सजिल्द 275.00
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त अजिल्द 170.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ '' 60.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ सजि. 100.00
डॉ० ओंकारनाथ सिंह अजिल्द 70.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु सजिल्द 650.00
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल अजिल्द 450.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु '' 200.00
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50.00
बौद्ध तथा जैनधर्म (धम्मपद और उत्तराध्ययन सूत्र का तुलनात्मक अध्ययन) *डॉ० महेन्द्रनाथ* 180.00
बौद्ध तथा जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* 90.00
प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ सजि. 250.00
डॉ० नीहारिका अजि. 150.00
इतिहास दर्शन एवं इतिहास लेखन *डॉ० प्रकाशनारायण सिन्हा* 120.00
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्डे चौबे* सजिल्द 300.00
अजिल्द 150.00
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा *डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 120.00
दिल्ली सल्तनत *डॉ० गणेशप्रसाद बरनवाल* सजिल्द 80.00, अजिल्द 50.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० ऊषारानी बंसल* 50.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरणलाल* 60.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन *डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव* 80.00

समाजशास्त्र, धर्म तथा दर्शन

समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव* 150.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
बौद्ध तथा जैनधर्म *डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह* 180.00
बौद्ध एवं जैन-धर्म तथा दर्शन *डॉ० सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'* 90.00
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80.00
अरविंद-दर्शन की भूमिका *एस०के० मैत्रा* 30.00
श्री अरविंद की साहित्यचिंतना *डॉ० शिवनाथ* 160.00
वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00
मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य *डॉ० (श्रीमती) गायत्री* 150.00
विकासवाद और श्री अरविन्द *डॉ० जयदेव सिंह* 20.00

शिक्षा

Fundamentals of Educational Research *Dr. K.P. Pandey* (H.B.) 450.00 (P.B.) 250.00
नवीन शिक्षा मनोविज्ञान सजिल्द 250.00
डॉ० के०पी० पाण्डेय अजिल्द 150.00
शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार *डॉ० के०पी० पाण्डेय* सजिल्द 250.00
अजिल्द 150.00
पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 150.00
शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी '' 150.00
Educational and Vocational Guidance in India (H.B.) 300.00 *Dr. K.P. Pandey* (P.B.) 150.00
Teaching of English in India (H.B.) 300.00 *Dr. K.P. Pandey* (P.B.) 150.00
शैक्षिक अनुसंधान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 100.00
Educational Philosophy of W.H. Kilpatrick *Dr. Pratibha Khanna* 300.00
Parental Awareness & Achievement of the Students *Shailja Singh* 150.00
शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम *डॉ० राजेश्वर उपाध्याय* अजिल्द 80.00 *डॉ० सरला पाण्डेय*
संसार के महान शिक्षाशास्त्री *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60.00
महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त *आर०आर० रस्क* 80.00

राजनीति-विज्ञान

Daishik Shastra (Bhartiya Polity) *Badrishah Thulgharia* 250.00
Theory of Rights (Green, Bosanquet Spencer and Laski) *Dr. Nalini Pant* 100.00
उदारवाद और गोपालकृष्ण गोखले *डॉ० सतीशकुमार* 60.00
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन *डॉ० राजेन्द्रप्रसाद सिंह* 30.00

अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य

सेविवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध *डॉ० जगदीशसरन माथुर* 160.00
Corporate Finance : Some Issues *Dr. V.S. Singh* 250.00
अर्थशास्त्र मौखिकी *डॉ० सुशीलकिशोर श्रीवास्तव* 60.00

पत्रकारिता, जनसंचार, सिनेमा

सम्प्रेषण और रेडियो शिल्प *विश्वनाथ पाण्डेय* 250.00
सम्पूर्ण पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* अजि. 280.00
सजि. 400.00
आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* सजिल्द 250.00, अजिल्द 150.00
हिन्दी पत्रकारिता *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह* सजि. 100.00
(भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक) अजि. 50.00
इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 60.00
संसद और संवाददाता *ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव* 150.00
हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप *डॉ० बच्चन सिंह पत्रकार* 200.00
पत्र, पत्रकार और सरकार *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 120.00
प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* सजिल्द 150.00
अजिल्द 100.00
संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता सजि. 300.00
डॉ० अशोककुमार शर्मा अजिल्द 200.00

समाचार और संवाददाता
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 80.00
संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50.00
The Rise and Growth of Hindi Journalism *Dr. R.R. Bhatnagar Ed. by Dr. Dhirendra Singh* 800.00
Mass Communication & Development *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00
Journalism by Old and New Masters *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00
Modern Journalism & Mass Communication *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250.00

संस्कृत व्याकरण, रचना तथा भाषाशास्त्र

संस्कृत-शिक्षा (भाग 1, 2, 3) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 39.00
प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 18.00
रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 50.00
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 170.00
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 80.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 120.00
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० भोलाशंकर व्यास* 80.00
भाषा विज्ञान (बी०ए० के लिए) *डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी* 30.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी (समास एवं विभक्त्यर्थ प्रकरण) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 20.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी (संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी व भारतेन्दु द्विवेदी* 20.00
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 400.00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 25.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० मुरलीधर पाण्डेय* 30.00
लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० रामअवध पाण्डेय व डॉ० रविनाथ मिश्र* 40.00
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्) *ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी* 20.00
पाणिनीय शिक्षा ('प्रभावती' व्याख्या संवलिता) *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 24.00

रस, अलंकार साहित्यशास्त्र समीक्षा तथा दर्शन

भामिनी विलास का प्रस्ताविक-अन्योक्तिविलास (सटीक) *सं० पण्डित जनार्दन शास्त्री* 50.00
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित पूर्ण तथा संशोधित परिवर्धित) *आचार्य चण्डिकाप्रसाद शुक्ल* 150.00
अलङ्कार-दर्पण (साहित्य-दर्पण दशम् परिच्छेद एवं छन्दोमञ्जरी) *डॉ० जनार्दन गङ्गाधर रटाटे* 15.00
चन्द्रालोक-सुधा एवं छन्दोमञ्जरी-सुधा *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 25.00
अभिनव रस सिद्धान्त *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 40.00
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 100.00
रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 150.00
चन्द्रालोक (1 से 4 मयूख) *डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी* 40.00
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150.00
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ० शालिग्राम द्विवेदी* 100.00
संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक *डॉ० आशारानी त्रिपाठी* 225.00
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास सजि. 350.00
डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी अजिल्द 200.00
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50.00
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80.00
भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय *डॉ० व्रजवल्लभ द्विवेदी* 60.00
भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व '' 60.00

वैदिक-साहित्य

वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00
वेदचयनम् *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 60.00
ऋङ्मणिमाला *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 45.00
ऋग्वेदभाष्यभूमिका *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 40.00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 125.00

पालि-प्राकृत-अपभ्रंश

पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह *डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र* 80.00
पालि-साहित्य का इतिहास *डॉ० कोमलचन्द्र जैन* 25.00
पालि-दर्पण *डॉ० मूलशंकर शर्मा, डॉ० कैलाश मिश्र* 16.00

संस्कृत-साहित्य (मूल ग्रन्थ, समीक्षा सहित)

भर्तृहरिकृत नीतिशतकम् *डॉ० देवर्षि सनाढ्य* 16.00
शांकरवेदान्ते तत्व-मीमांसा *डॉ० के०पी० सिन्हा* 40.00
शृङ्गारमञ्जरी सट्टकम् (श्रीमद्विश्वेश्वर) *सं० बाबूलाल शुक्ल* 20.00
मुद्राराक्षसम् *सं० डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 100.00
शिशपालवधम् (प्रथम सर्ग:) *डॉ० जनार्दन गंगाधर रटाटे* 24.00
किरातार्जुनीयम (प्रथम सर्ग:) *भारवि रचित* 15.00
कादम्बरी : कथामुखम् *डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 40.00
उत्तररामचरितम् *डॉ० रामअवध पाण्डेय* 120.00
कठोपनिषद (प्रथम अध्याय) *डॉ० रविनाथ मिश्र* 15.00
मेघदूतम् (कालिदास) *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 50.00
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150.00
अभिज्ञानशाकुन्तलम् *सं० डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 2-3) '' 25.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 9) '' 12.00
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 9) *डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी* 9.00
कुमारसंभवम् (प्रथम: सर्ग) '' 20.00
तर्क-संग्रह: *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 30.00
मनुस्मृति (द्वितीय अध्याय) 'तत्त्व-बोधिनी' *डॉ० शिवशंकर गुप्त* 40.00
नलोपाख्यानम् (वेदव्यास) *गंगासहाय 'प्रेमी'* 40.00
तैत्तिरीय प्रातिशाख्यम् *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 20.00

साहित्य शास्त्र

काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* सजिल्द 180.00
अजिल्द 100.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* सजिल्द, 150.00 अजिल्द 70.00
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 65.00

भाषाशास्त्र तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 180.00
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ० विजयपाल सिंह* 50.00
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना *डॉ० विजयपाल सिंह* 65.00
हिन्दी भाषा, साहित्य और नागरी लिपि *डॉ० कन्हैया सिंह* 40.00
व्यावहारिक और प्रयोजनमूलक हिन्दी *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 40.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र सजिल्द 250.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी अजिल्द 120.00
लिपि, वर्तनी और भाषा सजिल्द 30.00
डॉ० बदरीनाथ कपूर 20.00
हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति सजिल्द 40.00
डॉ० बदरीनाथ कपूर अजिल्द 25.00
हिन्दी वातायन *डॉ० के०एम० चन्द्रमोहन* 20.00
समसामयिक निबन्ध *डॉ० देवव्रत* 20.00
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 200.00

साहित्य समीक्षा

हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ सजि. 200.00
डॉ० रामचद्र तिवारी अजिल्द 120.00
कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 200.00
हिन्दी का गद्य साहित्य सजिल्द 600.00
डॉ० रामचन्द्र तिवारी अजिल्द 400.00

मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ सजिल्द 120.00
डॉ० रामकली सराफ अजिल्द 80.00
वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप *डॉ० युगेश्वर* 90.00
वाग्द्वार *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 250.00
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ
डॉ० रामकली सराफ 200.00
हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास
डॉ० लालसाहब सिंह 50.00
क्रान्तिकारी कवि निराला सजिल्द 120.00
डॉ० बच्चन सिंह अजिल्द 80.00
गोरखनाथ : नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में
डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय 250.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य सजिल्द 180.00
डॉ० रामचन्द्र तिवारी अजिल्द 100.00
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन
प्रो० वासुदेव सिंह 380.00
रैदास परिचई *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कविवर बिहारी *जगन्नाथदास 'रत्नाकर'* 40.00
निबन्धकार पं० विद्यानिवास मिश्र
डॉ० श्रुति मुखर्जी 50.00
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 80.00
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार *डॉ० मञ्जु त्रिपाठी* 100.00
मुक्तिबोध और उनकी कविता
डॉ० ब्रजबाला सिंह 180.00
भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र* 160.00
नागार्जुन की काव्य-यात्रा
डॉ० रतनकुमार पाण्डेय 25.00

तुलसी साहित्य समीक्षा

कथा राम कै गूढ़ *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00
मानस-मीमांसा *डॉ० युगेश्वर* सजिल्द 250.00
अजिल्द 150.00
तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय* 320.00
मध्यकालीन अवधी का विकास
डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० अनिलकुमार तिवारी 160.00

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 70.00
त्रिवेणी *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 30.00
चिन्तामणि *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 50.00

प्रसाद-साहित्य

ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 9.00
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा)
डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव 20.00
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा) *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 40.00
कामायनी (काव्य) *जयशंकर प्रसाद* 20.00
लहर *जयशंकर प्रसाद* 15.00
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 25.00
स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 20.00
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 16.00
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० पुरुषोत्तमदास मोदी 150.00
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ *डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 50.00
प्रसाद स्मृति वातायन *सं० विद्यानिवास मिश्र* 150.00

प्रेमचंद-साहित्य

कर्मभूमि (उपन्यास) *प्रेमचंद* 40.00
निर्मला *प्रेमचंद* 25.00
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30.00
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* सजि. 125.00 अजि. 45.00
गोदान *प्रेमचंद* सजि. 150.00 अजि. 60.00

कबीर-साहित्य

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*
प्रथम खंड : रमैनी सजि. 80.00, अजि. 50.00
द्वितीय खंड : सबद सजि. 300.00, अजि. 200.00
तृतीय खंड : साखी सजि. 250.00, अजि. 140.00
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 50.00
कबीर-साखी-सुधा *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 10.00
भये कबीर कबीर (सब जग जलता देखिया) *डॉ० शुकदेव सिंह* 250.00

लोक-साहित्य

भोजपुरी लोक साहित्य सजिल्द 400.00
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय अजिल्द 250.00
गंगाघाटी के गीत *डॉ० हीरालाल तिवारी* 100.00
लोकगीतों के संदर्भ और आयाम
डॉ० शान्ति जैन 700.00
पुरइन-पात (पाठ्य ग्रन्थ)
सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन'
डॉ० चितरंजन मिश्र 80.00
पुरइन-पात (भोजपुरी साहित्य संचयन)
सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन'
डॉ० चितरंजन मिश्र 200.00
भोजपुरी हृदयेश सतसई *श्रीकृष्ण राय हृदयेश* 120.00
बदमाश दर्पण (तेग अली)
सं० श्रीनारायणदास 60.00
चुनलगीत *सं० कृपाशंकर शुक्ल* 80.00

नाटक, एकांकी (मौलिक तथा सम्पादित)

भारत-दुर्दशा *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12.00
श्रीचन्द्रावली नाटिका *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 16.00
अँधेर नगरी *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12.00
गंगाद्वार *पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र* 40.00
भास्कर वर्मण (ऐतिहासिक नाटक)
डॉ० हीरालाल तिवारी 10.00
छोटे नाटक *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 22.00
शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 40.00
देवयानी (पौराणिक नाटक)
डॉ० एम० चन्द्रशेखरन् नायर 20.00

GEOGRAPHY

भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास
डॉ० श्रीकांत दीक्षित सजि. 150.00
अजिल्द 90.00

ZOOLOGY

Fishes of U.P. & Bihar
Dr. Gopalji Srivastava (H.B.) 200.00
(P.B.) 100.00

PHYSICS

Practical Physics
Dr. C.K. Bhattacharya (4 others) 60.00
Waves and Oscillations
Dongre & Bhattacharya 120.00

CHEMISTRY

Physical Cehmistry *Dr. Veena Arora* 150.00

ENGLISH LITERATURE

The Mayor of Casterbridge *Thomas Hardy* 50.00
Shakespearian Comedy *H.B. Charlton* 120.00
Shakespere : A Critical Study of His Mind & Art *Edward Dowden* 150.00
Introduction to Movements, Ages and Literary Forms *Dr. R.N. Singh* 80.00
Twentieth Century Poetry *Shruti Srivastava* 30.00

काव्य-संकलन (सम्पादित)

समकालीन कवि और उनकी कविताएँ
डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी 40.00
आधुनिक हिन्दी काव्य *डॉ० सत्यनारायण सिंह* 30.00
आधुनिक काव्य विविधा
डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी 25.00
अज्ञेय और मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविताएँ *डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी* 30.00
आधुनिक काव्यधारा *डॉ० विजयपाल सिंह* 30.00
छायावाद के प्रतिनिधि कवि
डॉ० विजयपाल सिंह 30.00
काव्य-सौरभ *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 25.00
दिशान्तर *डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव तथा डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 25.00
अस्मिता *डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक* 32.00
मध्यकालीन काव्य-संग्रह
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा 40.00
आधुनिक काव्य-संग्रह
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा 100.00
रीति-रस *डॉ० शुकदेव सिंह* 15.00
रीति काव्यधारा *डॉ० रामचन्द्र तिवारी तथा डॉ० रामफेर त्रिपाठी* 50.00
संक्षिप्त रामचन्द्रिका *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 20.00
अयोध्याकाण्ड (रामचरितमानस)
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 40.00

सूर-सञ्चयन *उर्मिला मोदी* 30.00
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 50.00

काव्य-ग्रन्थ

धूमिल की कविताएँ *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 80.00
जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 100.00
पद्मावत (स्तुति, सिंहलद्वीप वर्णन, मानसरोदक तथा नागमती सन्देश खण्ड) *डॉ० सच्चिदानन्द राय* 36.00
मलिक मुहम्मद जायसी और पद्मावत (नखशिख एवं नागमती वियोग खण्ड) *डॉ० मोहनलाल तिवारी* 40.00
परशुराम (खण्ड-काव्य) *श्यामनारायण पाण्डेय* 90.00
वेलि क्रिसन रुकमणी री *सं० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित* 80.00
संत रज्जब (रचना एवं समीक्षा) *डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय* 150.00
कीर्तिलता और विद्यापति का युग *डॉ० अवधेश प्रधान* 40.00

निबन्ध संग्रह

भोर का आवाहन *विद्यानिवास मिश्र* 20.00
निबंध संकलन *डॉ० रामकली सराफ* 40.00
आधुनिक निबन्ध *डॉ० सुरेन्द्रप्रताप* 20.00
निबन्ध और निबन्ध *उमाकान्त त्रिपाठी* 16.00
निबन्ध-सौरभ *डॉ० श्रीप्रसाद, डॉ० बिसम्भरनाथ* 12.00
संस्कृति-प्रवाह *प्रो० सोमेश्वर* 15.00
निबन्धायन *डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय* 15.00
निबंध निकष *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
गद्य-सौरभ *सुमन मोदी* 16.00
संस्कृति संगम *डॉ० श्रीप्रसाद तथा डॉ० बिसम्भरनाथ* 12.00
ललित निबन्ध *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 40.00
किरातनदी में चन्द्रमधु *कुबेरनाथ राय* 80.00

संस्मरण तथा रेखाचित्र

हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र *सं० डॉ० चौथीराम यादव* 20.00
संस्मरण और रेखाचित्र *सं० उर्मिला मोदी* 30.00
रेखाएँ और रेखाएँ *सं० सुधाकर पाण्डेय तथा डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 40.00

कहानी-संग्रह

आधुनिक प्रतिनिधि कहानियाँ *डॉ० मुनीन्द्र तिवारी* 45.00
प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ *सं० डॉ० कुमार पंकज* 80.00
कहानियाँ (कई कहानियाँ) *डॉ० शुकदेव सिंह* 30.00
आधुनिक कहानियाँ *डॉ० सुरेन्द्रप्रताप* 25.00
प्रतिनिधि कहानियाँ *डॉ० बच्चन सिंह* 45.00
कृती कथाएँ *डॉ० शुकदेव सिंह तथा डॉ० विजयबहादुर सिंह* 25.00

उपन्यास

मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30.00
बनगंगी मुक्त है *डॉ० विवेकी राय* 40.00
लोक-ऋण *डॉ० विवेकी राय* 80.00
कर्मभूमि *प्रेमचंद* 40.00
निर्मला *प्रेमचंद* 25.00
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30.00
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* 45.00
गोदान *प्रेमचंद* 60.00
खबर की औकात *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 300.00
सूर्यवंश का प्रताप *डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर* 180.00
पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *डॉ० बच्चन सिंह* 125.00
ननकी *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 60.00
तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120.00
सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250.00
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120.00
मरने के बाद *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 30.00
नसीब अपना-अपना *विमल मित्र* 40.00
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60.00
महाकवि कालिदास की आत्मकथा *डॉ० जयशंकर द्विवेदी* 80.00
गाँधी की काँवर *हरीन्द्र दवे* 40.00
बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60.00
बबूल *डॉ० विवेकी राय* 40.00
चौदह फेरे *शिवानी* 100.00
ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद) *अखिलन* 25.00
बज उठी पायलिया (इळंगोवडिहळ् रचित शिलप्पदिकारम्) *रा० वीलिनाथन्* 50.00
नया जीवन *अखिलन* 60.00

संस्मरण, जीवनचरित तथा यात्रा

स्मृति शेष : देवेश का दस्तावेज *डॉ० इन्द्रदेव सिंह* 200.00
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : व्यक्तित्व चित्र *ज्ञानचंद जैन* 190.00
वटवृक्ष (अमृतलाल नागर) की छाया में *कुमुद नागर* 190.00
लाई हयात आए... *डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय* 280.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00

हास्य-व्यंग्य

सिंहासन बत्तीसी *डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव* 120.00
धूर्त्ताख्यान *आचार्य हरिभद्र सूरि व डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव* 40.00
मुद्रिका रहस्य *शरद जोशी* 60.00
अन्नपूर्णानन्द रचनावली *अन्नपूर्णानन्द* 150.00
लालाजी का पर्दा *अशोकजी* सजिल्द 120.00, अजिल्द 80.00

ललित निबन्ध

कोकिल बोल रहा *युगेश्वर* 80.00
वाणी का क्षीरसागर *कुबेरनाथ राय* 120.00
किरात नदी में चन्द्र-मधु *कुबेरनाथ राय* 80.00
पत्र मणिपुत्तुल के नाम *कुबेरनाथ राय* 80.00
जगत तपोवन सो किया *डॉ० विवेकी राय* 100.00
कहीं दूर जब दिन ढले *डॉ० गुणवंत शाह* 40.00
नियति साहित्यकार की *सुधाकर उपाध्याय* 80.00

मनीषी, संत, महात्मा

प्रकाश पथ का यात्री *योगेश्वर* 160.00
अघोर पंथ और संत कीनाराम *डॉ० सुशीला मिश्र* 250.00
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग *बच्चन सिंह* 250.00
नीब करौरी के बाबा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 20.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 100.00
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) सजि. 50.00, अजि. *हरिश्चन्द्र मिश्र* 30.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
समर्थ रामदास *ना०वि० सप्रे* 50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कवि का जीवन-दर्शन) *ना०वि० सप्रे* सजिल्द 300.00, अजिल्द 200.00
योगी कथामृत *परमहंस योगानन्द* 70.00
Autobiography of Yogi *Paramhansa Yoganand* 100.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy *N.L. Gupta* 400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा सजि. 200.00, *गोपीनाथ कविराज* अजि. 143.00
ज्ञानगंज *पं० गोपीनाथ कविराज* 60.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shyma Charan Lahiree *Dr. Ashok Kumar Chatterjee* 400.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत के महान योगी (भाग 1-12) 6 जिल्द *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक जिल्द)* 100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00
भुड़कुड़ा की सन्त परम्परा *डॉ० इन्द्रदेव सिंह* 180.00
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 60.00

भये कबीर कबीर की भूमिका से

मरिहैं संसारा

—डॉ० शुकदेव सिंह

जीवन की ओर से नहीं; मृत्यु की ओर से संसार को देखने वाले कबीर कई तरह से पढ़े गये। मठों में बाबा की तरह जाने कब से, पंथों में पंथ गायक की तरह, ग्रन्थों में ग्रन्थों के विरोधी के रूप में, अपने धर्म में 'ना मुसलमान' की तरह/ आचार में 'ना हिन्दू' की तरह, गृहस्थों में साधु और साधुओं के बीच 'पकरि जुलाहा कीन्हा' के व्यथावाचक की तरह, सूफियों में सूफी, शहीद, मलामती, पीर, मुर्शिद की भाँति। अगर कंठ में सुर हो, तान हो, लय हो तो, सोलह रागों के राग, रागनियों, रंग और ठाट के सारे तुरुप में एक अनोखे निरगुनियाँ की पहचान लिए हुए। खुद कामगर, दस्तकार लेकिन भिखारियों और साधुओं में कभी माँगते हुए और कभी देते हुए विरक्त की तरह। इसीलिए पचास-इक्यावन साल पहले मुझे बताया गया कि कबीर तमाम तरह की किताबों में मिलेंगे लेकिन धूल में, मिट्टी में, दु:ख में, विषाद में ही असल कबीर मिलेंगे। कहीं पाठ की समस्या है, कहीं अर्थ की। कहीं अर्थ के अर्थ की। इसी तरह कहीं वेदान्ती हैं, कहीं निहंग। छह सौ साल से कुछ ज्यादा वर्ष हुए कबीर सारी दुनियाँ में भाषा के आर-पार सारंगी के तार में, खँजड़ी की छेड़छाड़ में, पाँव के घुँघरू में, करताल, खड़ताल, रबाब, किंगरी और कुकुही में वचन नहीं, वाद्य हैं, ऐसे विलक्षण व्यक्ति को जो छह सौ वर्षों से निरन्तर बन रहा है और तब तक बनता रहेगा जब तक आदमी अपने को ढँकते हुए, उभारते हुए, डरते हुए, डराते हुए, निर्भय नहीं हो जायेगा। इस कबीर की तलाश में पचास सालों के लिखित कुछ नमूने इस किताब में बिना किसी क्रम के प्रस्तुत हो रहे हैं। इसे विषयबद्ध भी किया जा सकता था, क्रमबद्ध भी, लेकिन कबीर का कोई क्रम बन ही नहीं सकता। वे सिलसिले से समझे जाने योग्य रचनाकार नहीं हैं। इसीलिए उनकी सही सार्थक पढ़ाई के लिए उनको पढ़ते हुए हर पन्ने का एहसास अलग होना चाहिए। कहीं कविता की दुनिया के अन्तिम व्यक्ति, कहीं लोगों का मन ही नहीं; दाँत भी खट्टाकर देने वाला साहस। लेकिन कबीर के बिना काम नहीं चल सकता। उनकी रचना के भी कई हजार रूप हैं ओर विवेचना के भी कई-कई, लेकिन दोनों स्तरों पर कबीर को रचना ही पड़ता है। क्योंकि, हर व्यक्ति की रचनाशीलता में ही कबीर की रचनाशीलता है। इस किताब के बहाने कबीर का पढ़ना पढ़ा जा सकता है।

क्या है कबीर का पढ़ना? इसको देखना है तो दलित-संज्ञान के प्रतिष्ठित लेखक, विद्वान्, आई०ए०एस० बार-बार अपने को दलित कहने वाले डॉ० धर्मवीर का पढ़ना ही देख लिया जा सकता है। उन्होंने तीन किताबें 'कबीर के आलोचक', पुस्तक-माला के रूप में लिखी है। कबीर को पढ़ने वाला कोई नहीं छूटा लेकिन सभी उन्हें कबीर के आलोचक लगते हैं, **अध्येता** नहीं। उनकी सारी मेहनत इस बात के लिए है कि कबीर को किसी ने ठीक से नहीं पढ़ा। किसी को उनसे यह भी पूछना चाहिए कि आपने कबीर को कितना पढ़ा? कैसे पढ़ा? **साखी** क्या है? वह दोहा है? या दोहा नहीं है? **सबद** क्या है? वह शब्द है या पद? या दोनों नहीं है? **रमैनी** क्या है? उसमें जो बातें लिखी गई हैं उनमें किस तरह की रम्यता है। **चांचर, बेइल, विरहुली, विप्रमतीसी चौंतीसा कहरा, चैती, घांटो, फाग, बसंत, जंजीरा** क्या है? **इंगला, पिंगला, सुखमन तार** क्या है? जुलाहा, कसाई, साधु, पांड़े, काजी, मुल्ला, भाई क्यों उनकी कविता में हैं? फिर राग सोरठ में क्यों वह कहते हैं कि **मैं तो बिगड़ गया तुम नहीं बिगड़ना, हरा भरा पेड़ था चन्दन के संग चंदन होकर बिगड़ गया। निर्मल जल था गंगा के संग गंगा होकर बिगड़ गया। लोहा था पारस के संग सोना होकर बिगड़ा। कबीर था ओछा कसब वाला जुलाहा, राम के संग राम होकर बिगड़ा।** क्या है इसका मतलब? यह तो नहीं कि कोई बनता नहीं, सभी बिगड़ते ही हैं। या, यह तो नहीं कि किसी तरह का कवि-समय या मिथक या विश्वास केवल सपना होते हैं, सच नहीं। इस तरह कबीर कई बार पलट कर देखते हैं और अन्त में 'आइल गवनवाँ की बारी' के बहाने विदा का गीत गाते हैं। विवाह के रूपक में मौत का मुखौटा लगाते हैं। ठीक से बैठने को '**उनमनी**' और '**उदासी**' कहते हैं। उनकी कविता दुनियाँ की ओर जाती है या स्वर्ग, हेवन या किसी स्तर पर दोजख की ओर जाती है। कबीर की कविता से जुड़े हुए बहुत छोटे-छोटे सवाल हैं? इनको हल करने के लिए भी कबीर को कितने लोगों ने पढ़ा? मैं तो चार दशक से ज्यादा कबीर को पढ़ाते हुए इन सवालों से ही जूझता रहा। ■

प्राध्यापकीय आलोचना

अरविन्द त्रिपाठी

''भारतीय काव्य-परम्परा में कविता के नायक महापुरुष और सत्ता पुरुष ही दिखायी पड़ते हैं, लेकिन आज की कविता का सच्चा नायक (हीरो) वह साधारण मनुष्य है जो इस देश में सदियों से दृश्य से बाहर रहा है, आज की राजनीति में लोकतांत्रिक शक्तियाँ भले कमजोर पड़ गयी हों पर आज की कविता सच्चे अर्थों में जनतांत्रिक, लोकधर्मी और सांस्कृतिक बहुलता की प्रबल पक्षधर है। कहना चाहिए आज की कविता इस देश की जनता के साथ व्यवस्था के विरुद्ध सीधे प्रतिपक्ष के रूप में तन कर खड़ी है।''

अतीत और आज की कविता के बदलाव को रेखांकित करते हुए यह अहम विचार रखते हैं—आज की कविता के प्रमुख आलोचकों में शुमार होने वाले आलोचक-कवि अरविन्द त्रिपाठी, जिन्हें हाल ही में समकालीन आलोचना में उल्लेखनीय अवदान और नयी पीढ़ी की आलोचना को विकसित करने के लिए स्थापित-प्रतिष्ठित देवीशंकर अवस्थी स्मृति सम्मान 2004 से नवाजा गया है। साहित्य अकादमी सभागार, नई दिल्ली में स्व० देवीशंकर अवस्थी के जन्मदिन पर आयोजित राजधानी समेत देश के अन्य हिस्सों से आये लेखकों-संस्कृतिकर्मियों की भारी उपस्थिति में अरविन्द त्रिपाठी को यह सम्मान उनकी गम्भीर महत्त्व की बहुचर्चित काव्यालोचना कृति '**कवियों की पृथ्वी**' पर प्रदान किया गया है। श्री त्रिपाठी को इस सम्मान से अलंकृत करते हुए हिन्दी की यशस्वी **शलाका-कथाकार कृष्णा सोवती** ने उनकी आलोचना दृष्टि की पड़ताल और आलोचनात्मक उपलब्धियों की सराहना करते हुए बेवाक लहजे में कहा है कि ''ऐसे सम्मान न तो सिर्फ तेज तर्रारों के लिए है और न साहित्य संसार के भगोड़े और फरारों के लिए है। आलोचना की नयी, उभरती, विवेकी प्रतिभाओं से आश्वासन पाना ही इस सम्मान का लक्ष्य है, जो इस सम्मान को गरिमा प्रदान करता है। श्री अरविन्द त्रिपाठी जैसी प्रतिभा को सम्मानित करके हम गौरव का अनुभव कर रहे हैं।'' उन्होंने अपने वक्तव्य में श्री त्रिपाठी के कथन का समर्थन करते हुए इजहार किया कि ''आलोचना अंतत: जीवन की खोज है''। इसलिए जरूरी है कि आलोचना को रचना के जीवन-तत्त्वों से जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि अरविन्दजी ने आलोचना के लिए एक शब्द प्रयोग किया है—'चौकसी'। मुझे बहुत अच्छा लगा कि कहीं कोई वैसे ही सोच रहा है—चौकन्ना। आप अपने ही प्यार में मस्त नहीं हैं कि साहब जो मैंने लिख दिया उसके बाद दूसरा कोई लिख नहीं सकता।

सुश्री सोवती ने श्री अरविन्द त्रिपाठी की पुरस्कृत कृति 'कवियों की पृथ्वी' के कई लेखों के अंशों का वाचन करते हुए उनकी आलोचना दृष्टि की अचूकता और बेवाकी की पड़ताल की। उनकी काव्यालोचना की भाषा की तारीफ करते हुए खिलंदड अंदाज में कहा कि ''दोस्तों आलोचना के मत से अभी लेखकों पर सट्टा नहीं खेला जाता इसलिए आलोचकों के मत से अरविन्द त्रिपाठी की आलोचना की भाषा में प्रयुक्त मुहावरों पर मुनासिब राशि लगाई जा सकती है।''

पुरस्कार समारोह के मौके पर अरविन्द त्रिपाठी ने आलोचक के रूप में प्रसिद्धि पाने के बावजूद अपने को 'मूलत: और अंतत: कवि' कहा। उन्होंने कहा कि ''यद्यपि यह पुरस्कार मुझे आलोचना के लिए दिया गया है पर मैं मूलत: और अंतत: अपने को कवि ही पाता हूँ। अपने लेखन की शुरुआत में करीब एक दशक तक मैंने कविताएँ ही लिखी। फिर बेहतर कविता लिखने की खोज में दूसरों की कविताओं की ओर गया। कविता से आलोचना कैसे लिखना शुरू हुआ। कुछ ठीक-ठीक याद नहीं, पर बेहतर कविता लिखने की खोज में ही मैं आलोचना की ओर गया। अगर कवि न होता तो आलोचक भी न होता। इसलिए आलोचना मेरे लिए अंतत: कविता को पाने के लिए भटकना है। लोकजीवन ही मेरी आलोचना दृष्टि का मूल उपजीव्य है, जिसे मैं

आलोचना लिखते समय रचना और जीवन में साथ-साथ खोजता हूँ। खासतौर से कविता की आलोचना लिखते वक्त मैं कविता की तह तक जाने के लिए कविता की आत्मा को टटोलता हूँ।''

हिन्दी में आलोचना की स्थिति के सवाल पर अरविन्द त्रिपाठी का मानना है कि ''कुछ लोग आलोचना को साहित्य में दोयम दर्जे का लेखन मानते हैं। यह प्रवृत्ति आलोचना और आलोचक का अवमूल्यन है। आलोचना एक सांस्कृतिक कर्म है जो मूलत: सर्जनात्मक है। वह रचना या रचनाकार की परजीवी नहीं है। कुछ लोगों का मत है कि बड़ा आलोचक युग प्रवर्तक होता है, कुछ कहते हैं नहीं वह रचनाकार का अनुगमन करता है। यह दोनों धारणाएँ गलत है। आलोचना एक सहकारी प्रयास है निरन्तर चलने वाला एक असमाप्त वाद—'विवाद और संवाद'। सच्चे अर्थों में आलोचना अपने समय, समाज, साहित्य, फिल्म और कलाओं के बीच एक निरन्तर बजता संवाद है। हिन्दी आलोचना की एक बड़ी और समृद्धशाली परम्परा रही है। उसका वर्तमान भी उतना निराश करनेवाला नहीं है जितना बताया जा रहा है। पर हिन्दी आलोचना का सबसे अधिक नुकसान प्राध्यापकीय आलोचना की प्रवृत्ति ने किया। आलोचना में जो जड़ता, पिछड़ापन, भाषा का लहड़पन, पृष्टपेषण और कूपमंडूकता व्याप्त हैं वह ज्यादातर प्राध्यापकीय आलोचना की देन है। दुर्भाग्य से कालान्तर में आलोचना को सिर्फ विश्वविद्यालयों का ही उत्पाद मान लिया गया। फलत: साहित्य में प्रतिभाशाली लोग कविता, कहानी में ही रसलीन हो गये। लेकिन 'सीन' बदला है। इधर की नयी पीढ़ी के अनेक आलोचकों ने प्राध्यापकीय आलोचना को अपदस्थ कर दिया है। उसकी नयी उठान सर्जनात्मक और उर्वर है।''

हिन्दी आलोचना की वर्तमान चुनौतियों पर दृष्टिपात करते हुए अरविन्द त्रिपाठी ने इशारा किया कि ''आज आलोचना का सबसे बड़ा संकट खुद आलोचक की भाषा है। इसे हर हाल में बदलना होगा। अगर हमें हिन्दी आलोचना का विकास करना है तो उसे सबसे पहले जीवन की भाषा से जोड़ना होगा। इसके लिए नये आलोचकों को नये शब्द बीज, नये मुहावरे, नये अर्थ संकेत खोजने होंगे। तभी आलोचना उर्वर और पठनीय होगी।''

किताब और बुजुर्ग

बीती हुई बातें,
जो कभी ख्वाब-सी लगे
जो कुछ छितर गया,
वो बेहिसाब सी लगें
कहे जा ना मनवा से,
और पढ़ना
बहुत जरूरी है—
जिन्दगी बुजुर्ग की
जब फटी किताब-सी लगे...

—नन्दल हितैषी
प्रयाग, इलाहाबाद

कथन

भारतीय काल चिंतन

जब अँधेरा घना होता है तब दीपक की आवश्यकता होती है। आजादी के बाद ऐसा क्या हुआ जिसने हमसे हमारा कालबोध छीन लिया। हमने अपनी वैज्ञानिक काल गणना को आधुनिकता के मोहपाश में बाँध लिया तथा अपनी पीढ़ी को दोहरे कालबोध में जीने के लिये अभिशप्त कर दिया। भारतीय चिन्तना काल और दिक् को जन्म देने वाली चेतनावादी चिन्तना है। अखिल ब्रह्माण्ड में जो महत्त्व तिनके का है उतना ही मनुष्य का भी। भारतीय कालगणना चक्रिय काल गणना है तथा पश्चिम की रेखीय जो एक बिन्दु से शुरू होती है और अगले बिन्दु पर समाप्त होनी है। जबकि भारतीय कालगणना सनातन है। भारतीय सनातन को गढ़ा नहीं गया यह तो सनातन पुरुष की सनातन यात्रा है। समय निर्‌अवधि तथा निर्‌बन्ध है। जो समय हमने अन्य कार्यों से उधार लिया है क्या उसे लौटा पायेंगे। यहाँ तो ईश्वर भी बेटा बनकर आना पसन्द करता है। दूत या पैगम्बर बनकर नहीं।

—श्री राम परिहार

राजनीति ?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक श्री के०एस० सुदर्शन का कथन है—''राजनीति एक वेश्या है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उससे दूरी बनाये रखता है। राजनीति का रूप नकारात्मक होता है, समय-समय पर अपने को बदलता रहता है—जैसे वेश्या अपने वस्त्र बदलती रहती है।''

'एक भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी कहते थे—

सम्मानी पथ भुलाय क्यों
शैतान की सखी।
तेरे हजार हाथ
कहते हैं पारखी॥

निर्मल वर्मा

निर्मल वर्मा, भारतीय कथा साहित्य के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षरों में से एक हैं। एक कथाकार के रूप में वे हमारे समय में व्यक्ति के आत्मसंघर्ष, आत्मबोध, अंत:करण ओर उसकी नैतिक जिम्मेवारी के सूक्ष्मतम ब्यौरों को गूँथते हुए, इतिहास और स्मृति की छाया में विकसित-विकल उद्विग्न सम्बन्धों के अत्यन्त संवेदनशील रचयिता हैं।

—प्रो० के० सच्चिदानंदन
सचिव, साहित्य अकादेमी

❑ ❑ ❑

मनुष्य की खण्डित मूर्ति

अतीत हमारी परम्परा का हिस्सा है। साहित्य में मनुष्य की जो प्रतिमा है वह मुझे प्रेरित करती रही है। मैंने 1951-52 में लिखना शुरू किया यानि 20वीं सदी के मध्याह्न से 21वीं सदी के आरम्भ तक तो जिसने सबसे ज्यादा मुझे आकर्षित किया, वह है मनुष्य की खण्डित मूर्ति। मुझे लगता है कि मनुष्य एक खण्डित वस्तु है जो न ईश्वर है और न जानवर बल्कि बीच का एक पैण्डुलम जैसा व्यक्ति है। जो अपने कर्म में कभी ईश्वर से भी ऊपर उठ जाता है और कभी जानवर से भी बुरे कर्म करता है। हमारे भीतर जो मौन जमा है, उसे किसी ने इतनी किताबें लिखने के बाद पहचाना नहीं। इसलिए अगर ईश्वर को देखना हो तो मनुष्य को उसके अन्तस में देखना होगा।

—निर्मल वर्मा

(1)
दस्तावेज है
किताब संस्कृति की
विश्व-स्मृति की।

(2)
दूरदर्शन
कम्प्यूटर विकल्प
नहीं ग्रन्थ का।

(3)
पुस्तक से न
दूर जाओ, निष्ठुर
बन जाओगे।

(4)
थक जाते हैं
यंत्र, किन्तु पुस्तक
ऊर्जा का स्रोत।

—नलिनीकान्त
अंडाल, पं० बंगाल-723 321

न्यायालय में कविता

झवेरचंद मेघाणी, जो गुजराती के सुविख्यात कवि थे, गाँधीजी के आह्वान पर स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े थे। उन्हें सत्याग्रह में भाग लेने जाते देखकर उनके एक साहित्यकार मित्र ने टोका, ''आप जाने-माने कवि हैं, आपका राजनीतिक आन्दोलन से क्या सरोकार है?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''अपनी मातृभूमि पर, देश पर संकट के समय मौन साधे रखना अधर्म है। मैं भारत का नागरिक होने के नाते मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्यपालन की भावना से सत्याग्रह कर जेल जा रहा हूँ।''

मेघाणी 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा लगाते हुए पकड़े गए। उन्हें धोलेरा की अदालत में न्यायाधीश इसरानी के सामने पेश किया गया। इसरानी मेघाणी की कविताओं के प्रशंसक थे। उन्होंने सजा सुनाने के बाद विनम्रता से कहा, ''मेघाणी भाई, क्या अपनी कोई कविता सुनाओगे?''

मेघाणी ने *समर्पण* शीर्षक कविता सुनाई। कविता की पंक्तियाँ सुनकर न्यायालय में उपस्थित वकीलों आदि की ही नहीं, स्वयं न्यायाधीश इसरानी की आँखें भी सजल हो उठीं।

—शिवकुमार गोयल

पुस्तक समीक्षा

एकनाथी भागवत

ना०वि० सप्रे

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-402-5

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 600.00

महाराष्ट्र के वारकरी पंथ के संतों में एकनाथ का स्थान अद्वितीय है। ज्ञानेश्वर महाराज ने 'ज्ञानेश्वरी' के माध्यम से ज्ञान और भक्ति का संचार महाराष्ट्र की जनता को उपलब्ध कराया। बाद में नामदेव ने सन् 1350 तक ज्ञान प्रसार का कार्य अच्छी तरह निभाया। दुर्भाग्यवश सन् 1350 से 1550 के तत्कालीन मुस्लिम शासन के कालखण्ड में महाराष्ट्र के जनजीवन में भारी उथल-पुथल मच गयी, धर्म की हानि हुई और सर्वत्र निराशा का वातावरण छा गया।

तभी सौभाग्यवश सन् 1550 में एकनाथ का प्रादुर्भाव हुआ और महाराष्ट्र में परमार्थ विषयक लोकजागृति का उदय हुआ।

ज्ञानेश्वर और एकनाथ के बीच लगभग तीन-सौ वर्ष का अन्तर था किन्तु हृदय से वे एक थे। उनके मन पर ज्ञानेश्वरी का इतना अधिक प्रभाव था कि उन्होंने भागवत पुराण के ग्यारहवें स्कन्ध पर विस्तृत टीका लिखी। एकनाथी भागवत ज्ञानेश्वरी का ही नया अवतार है। इसकी रचना पैठण में शुरू हुई और समापन वाराणसी में मणिकर्णिका पर हुआ।

एकनाथी भागवत धर्म की नींव का पत्थर है। ग्रन्थ में विशेषण प्रचुर मात्रा में है और भाषा की ओजस्विता तथा कथा का माधुर्य पाठकों को भक्तिरस में बहा ले जाता है।

यह भी संयोग है कि एकनाथी भागवत का समापन काशी में हुआ था इसका हिन्दी भावानुवाद भी काशी से ही प्रकाशित है।

समर्थ रामदास

ना०वि० सप्रे

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-902534-5-X

अनुराग प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 50.00

रामदास का जब जन्म हुआ उस समय महाराष्ट्र में धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में अफरा-तफरी मची हुई थी। जनता मुस्लिम आतंक से पीड़ित और प्रताड़ित थी। तत्कालीन हिन्दू राजाओं में एकता, संगठन तथा परस्पर सहयोग की भावना का नितांत अभाव था। देश जातियों और सम्प्रदायों में बँटा हुआ था। स्त्रियों की हालत तो सबसे खराब थी। उनके अभिभावक मुस्लिमों के हाथों उनकी दुर्दशा देखने के भय से उनकी जीवन-लीला समाप्त कर देना ही उचित समझते थे। रही-सही कसर प्रकृति पूरा कर देती थी और कभी अनावृष्टि से तो कभी अतिवृष्टि से किसान दम तोड़ देते थे।

अपने देशाटन के दौर में समर्थ की इस स्थिति को देखकर जो प्रतिक्रिया हुई उसका उन्होंने इन शब्दों में वर्णन किया है—

म्लेच्छ दुर्जन उद्दंड।
बहुतां पदसांचे माजले अंड॥

इसमें समर्थ ने जनता के उत्पीड़न को अंड अर्थात् विद्रोह कहा है।

समर्थ प्रयत्नवादी थे अत: उन्होंने ईश्वरी इच्छा को अन्तिम नहीं माना है। सौभाग्य से उनके काल में शिवाजी जैसे पुरुष का प्रादुर्भाव हुआ। एक बार जब शिवाजी तुकाराम से मिलने गये और उनसे अनुग्रह की, प्रार्थना की तो तुकाराम ने उनसे रामदास के पास जाने की सलाह दी। तुकाराम रामदास के अलौकिक व्यक्तित्व को दो ही मुलाकातों में परख चुके थे। समर्थ परमार्थ के संस्थापक उद्धारक और धर्म का समर्थक राजा चाहते थे जिसे उन्होंने शिवराया के रूप में प्राप्त किया। श्री शिवराया की शक्ति और रामदास की युक्ति से महाराष्ट्र में सुदृढ़ हिन्दू राज्य की स्थापना हो सकी।

रामदास ने ज्ञानदेव के भागवत धर्म के सिद्धान्त को उसके व्यावहारिक पक्ष के साथ जनता के सामने रखा। उन्होंने महाराष्ट्र के ब्राह्मण और क्षत्रियों को स्वाभिमान, स्वार्थ-त्याग, प्रयत्नवाद तथा संगठित प्रतिरोध का मंत्र दिया। साधारण-से-साधारण मनुष्य को समाज का उपयोगी घटक बनाने के लिए उन्होंने विपुल मात्रा में साहित्य का सृजन किया। गृहस्थ जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए उन्होंने दासबोध की रचना की। लोगों को जागरूक और उत्साहपूर्ण बनाने के लिए किसी पत्रकार की भूमिका निभायी। दासबोध गृहस्थ जीवन की आचार संहिता है। उनकी दृष्टि कितनी सटीक और दूरगामी थी इसकी कल्पना इसी बात से की जा सकती है कि उन्होंने उस काल में सीमित परिवार का सन्देश दिया। वे स्त्री-पुरुष में भेद नहीं करते थे। उन्होंने कितनी ही महिलाओं को मठों का महन्त बनाया। वे अपने समय से काफी आगे थे। उनके समय में जो समस्याएँ थीं वे आज भी कायम हैं। शायद पहले से भी विकृत स्वरूप में।

कैबरे डान्सर

आबिद सुरती

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-413-0

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 200.00

आज मुम्बई में बार बाला पर रोक लगाई जा रही है किन्तु मुम्बई में एक समय था जब कैबरे डान्सर अधिक लोकप्रिय थी। अपने जिस्म—

टुनाइट एन्ड एवरी नाइट
डाइन एन्ड डान्स विद
हतिफा-लतिफा
(अरबस्तान के हरम से पधारी दो परियाँ)
एन्ड द एनचान्टिंग म्यूज़िक
बाय द किंग ऑफ ट्यून्स
गूड़ी सिरवाई।

अपने जिस्म की नुमाइश करनेवाली एक लड़की की दास्तान.....

साठ के दशक से कैबरे डान्स की ऐसी हवा चली थी कि दुनिया का शायद ही कोई देश उससे अछूता रहा होगा। जैसे नवाबों के दौर में तवायफों का दबदबा था, वैसे ही उस दशक में कैबरे डान्सर जनमानस पर छायी थी। मुम्बई के शानदार होटलों में डिनर के साथ कैबरे डान्स का कार्यक्रम होना गर्व की बात थी। बालीवुड की फिल्मों में हेलन का कैबरे अभिन्न अंग बन गया था।

'कैबरे डान्सर' उसी दशक की एक कैबरे-गर्ल की कहानी है, जो अपना जीवन नये सिरे से शुरू करना चाहती है। वह तंग आ चुकी है अपने ही जिस्म की नुमाइश से। अब उसे तीन दीवारों वाला खुला मंच नहीं, चहारदीवारी में बन्द गृहस्थी चाहिए। उसे हजारों पुरुषों की प्रशंसा नहीं, एक मर्द का सच्चा प्यार चाहिए।

उसकी इच्छा फलीभूत हुई, लेकिन उसके सपने चकनाचूर हो गये। जीवन घुटन और सीलन भरा तहखाना बन गया और साँस लेने के लिए उसमें कोई सुराख भी नहीं था। वह क्या करती ?

संत रज्जब

डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय

रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

अरुणाचल विश्वविद्यालय, ईटानगर

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-424-6

विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

मूल्य : 150.00

रज्जब-भक्ति-आन्दोलन के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। सामान्यत: भक्ति-आन्दोलन के सन्दर्भ में रज्जब की चर्चा नहीं होती। रज्जब, रहीम और रसखान के बाद के हैं—सूफी कवि जायसी के भी बाद के। रज्जब न रामभक्त कवि हैं न कृष्ण भक्त वे राम-रहमी और केशव-करीम की एकता के गायक हैं। निर्गुण संत हैं—दादू दयाल के प्रमुख शिष्यों में से एक।

रज्जब ने अपने जीवन में दुनिया के विविध रंगों को देखा था। अनेकानेक प्रकार के मतों से टकराये थे। वेद और कुरान दोनों के सार तत्त्व का बोध प्राप्त किया था। पोथी पण्डित और व्यवहार पण्डित दोनों के बीच का मार्ग उनका मार्ग था। वे कागद लेखी भी कहते हैं और आँखन

देखी थी। रज्जब जैसे साहित्यकार ही सही मायने में भारत की सामयिक संस्कृति के वाहक हैं। जैसे-जैसे देश में सांस्कृतिक चिन्ता गहरी होगी, रज्जब जैसे कवि प्रासंगिक होते जायेंगे।

ऐसे संत कवि के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के साथ समकालीन संतों के कृतित्व का विश्लेषण इस पुस्तक की विशेषता है।

पुस्तक का विषय क्रम

1. भक्ति आन्दोलन और संत रज्जब, 2. रज्जब का व्यक्तित्व, 3. रज्जब की ग्रन्थन कला, 4. रज्जब के दार्शनिक और साधना सबन्धी विचार, 5. रज्जब का काव्य कौशल, 6. रज्जब वाणी।

LAII HAYAAT AAE

Laxmidhar Malviya

First Edition : 2004

ISBN : 81-7124-369-X

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Rs. : 280.00

Compliments to you on your publication LAII HAYAAT AAE, a matcless memoir of life and literature, a delightful trek down the lost lanes of riches that make Banaras-Allahabad aglow, which a friend of mine Dr. L.D. Malaviya wrote. **—Indu Kumar Shukla**

पांचाली

नाथवती-अनाथवत

डॉ० बच्चन सिंह

प्रथम संस्करण :

ISBN : 81-7124-

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 125.00

पांचाली के बहाने स्त्री विमर्श

बलराज पांडेय

'सूतो वा सूत पुत्रो वा' के बाद 'पांचाली नाथवती-अनाथवत्' बच्चन सिंह का दूसरा उपन्यास है, जो पहले की तरह महाभारत की कथाभूमि को आधार बनाकर लिखा गया है। आज जबकि हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का अधिक जोर है, महाभारत की पांचाली यानी द्रौपदी को एक ऐसी नायिका के रूप में प्रस्तुत करना स्वाभाविक ही है जो अपने समय के पुरुष वर्चस्व वाले समाज को चुनौती देती हुई अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का निर्माण करने में समर्थ हुई थी।

किसी ने कहा है कि सौन्दर्य और संग्राम का नाम ही जिन्दगी है और दोनों पांचाली में मूर्तिमान हुए हैं। वैसे पाणिनी के अनुसार भारत का अर्थ ही है संग्राम। इस प्रकार महाभारत एक महासंग्राम है। 'पांचाली' में सौन्दर्य और संग्राम साथ-साथ चलते हैं। फिर, रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना के शोधक-आलोचक बच्चन सिंह जब कथा-रचना करेंगे तो उसमें प्रेम और सौन्दर्य के दर्शन पग-पग पर होंगे।

इस उपन्यास में बच्चन सिंह सौन्दर्य को भी परिभाषित करने का प्रयत्न करते हैं। पुराने सौन्दर्यवादियों की तरह वे यह तो मानते हैं कि मनुष्य के पास एक भीतर का सौन्दर्य होता है और एक बाहर का सौन्दर्य होता है। लेकिन बाहर-भीतर के सौन्दर्य की विशिष्टता बताने में वह चूक गए हैं। वह लिखते हैं ''भीतर का सौन्दर्य मुक्त करता है, जबकि बाहर का सौन्दर्य कर्म की ओर प्रेरित करता है और टिकाऊ होता है।'' अब यह हमारी समझ से बाहर की बात है कि कैसे भीतर का सौन्दर्य कर्म की ओर प्रेरित नहीं करता और टिकाऊ नहीं होता। हमारी समझ में सौन्दर्य चाहे जहाँ हो, वह मनुष्य के मन में सदा नए उत्साह की योजना करता है और यह उत्साह ही हमें कर्मक्षेत्र में प्रवेश कराता है। वास्तविक सौन्दर्य हमें मानवहित के उस कर्म की ओर प्रेरित करता है, जिसमें परिणाम की कोई चिन्ता नहीं होती। 'पांचाली' में बच्चन सिंह सौन्दर्य और प्रेम को जिस तरह से व्याख्यायित करते हैं, लगता है वह उनकी निजी अनुभूति पर आधारित है और निजी अनुभूति जब संकीर्ण मन, संकीर्ण विचार के दलदल में फँस जाती है, तब उसकी अभिव्यक्ति पर इसका साफ असर देखा जा सकता है।

पांचाली के चरित्र का चरमोत्कर्ष है अपने अपमान का बदला लेने का दृढ़ संकल्प। उसके मन में प्रतिशोध का भाव दो स्तरों पर है। एक तो कौरवों के प्रति, जिन्होंने भरी सभा में उसे बेइज्जत किया और दूसरा पाण्डवों के प्रति, जिन्होंने उसे बेइज्जत होने दिया। कुल मिलाकर समूचे पुरुष समाज के प्रति उसके मन में प्रतिशोध का भाव है। कर्ण को इनकार करने का साहस दिखानेवाली पांचाली कौरवों और पाण्डवों को महासंग्राम में झोंककर ही अपने हृदय को ठंडा कराती है। वह हार-जीत की चिन्ता किए बगैर आर-पार का युद्ध देखना चाहती है। पांचाली के मन में युद्ध सम्बन्धी स्पष्ट अवधारणा का वर्णन कर लेखक ने उसे वीर नारी की गरिमा देने में कोई संकोच नहीं किया है। लेखक अपनी ओर से भी यह संवाद देता है ''स्त्रियाँ उसी पुरुष को पसन्द करती हैं, जो युद्धप्रिय हैं।'' वैसे, बच्चन सिंह का युद्ध सम्बन्धी यह संवाद ऐसे समय में आया है, जब युद्ध कोई नहीं चाहता—स्त्रियाँ भी नहीं। वह उपन्यास में यह घोषणा करने से भी नहीं चूकते कि ''भविष्य शास्त्रों का नहीं, शस्त्रों का होगा, अपहरण, भटकाव, बलात्कार और मृत्यु का होगा।'' वर्तमान सामाजिक परिवेश से लेखक इतना खिन्न लगता है कि यहाँ भी न्याय-अन्याय के छिड़े युद्ध में उसे निराशा ही दिखाई देती है ओर लेखक की यह निराशा बहुत हद तक जायज भी है।

वैसे, स्त्री का सौन्दर्य भी उसकी अपनी एक शक्ति ही है और इस शक्ति से पुरुष हमेशा पराजित होता आया है। पांचाली के स्पर्श सुख से भीम में दुगुना उत्साह आता है और वह कीचक के साथ युद्ध करता है। स्त्री का सौन्दर्य उसकी शक्ति और शत्रु दोनों है। कीचक के मन में पांचाली को बलपूर्वक पाने की जो ललक दिखाई देती है, उसका कारण उसका सौन्दर्य ही है और भीम जब कीचक से युद्ध कर पांचाली की रक्षा करता है उसके मूल में भी उसका सौन्दर्य ही है। शारीरिक शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति का सौन्दर्य के समक्ष नतमस्तक होना सौन्दर्य की महिमा का स्थापन है, लेकिन भीम के मुँह से सौन्दर्य की व्याख्या देकर बच्चन सिंह मानो अपने मन के किसी कोने-अंतरे में बिलख रही अतृप्त आकांक्षाजनित कुंठा की ही अभिव्यक्ति करते हैं, ''सौन्दर्य का नशा सबसे बड़ा नशा होता है और नशा तो खाने पर होता है, सौन्दर्य का नशा देखने मात्र से होता है। मूर्खों को वह वर्षों तंग करता है, महामूर्खों को जनम भर।'' एक सौन्दर्यवादी आलोचक की सौन्दर्य-विरुद्ध यह टिप्पणी साहित्य के पाठक को मानसिक स्वास्थ्य देनेवाली कतई नहीं कही जा सकती।

बच्चन सिंह अपने उपन्यास में युद्ध की अनिवार्यता और निस्सारता दोनों पर अपनी टिप्पणी देते हैं। मनुष्य अपने अन्दर के कीचक से लड़ता है, अपने अकेलेपन से लड़ता है, परिवार और समाज में बिखरे हुए कीचकों से लड़ता है, लेकिन संग्राम, महासंग्राम की स्थिति तब आती है, जब वह विवेक खो देता है, मर्यादाएँ तोड़ देता है। इसलिए इस पृथ्वी को अगर बचाना है तो मनुष्य अपने विवेक का इस्तेमाल रचनात्मक कार्यों के लिए करे। 'पांचाली' में कृष्ण भरसक प्रयास करते हैं कि युद्ध न हो ताकि पृथ्वी को विनाश से बचाया जा सके, लेकिन युद्ध की स्थिति वही पैदा करता है जो ताकतवर है, जो शासक है। शासक यदि शासकत्व भाव का परित्याग कर वंचित को भी उसका अधिकार दे तो युद्ध टल सकता है। 'पांचाली' उपन्यास में शासक के अविवेकी, अहंकारी हो जाने के कारण ही युद्ध होता है और युद्ध का भयावह परिणाम यह कि, ''त्रिगर्त, पांचाल और कुरुकुल की स्त्रियाँ मृत्यु के मेले में अपने स्वजनों के शव माँग रही हैं और विवाह के बाद पहली बार गांधारी अपनी खुली आँखों से देख रही है—अस्थि, केश, रक्त, चर्बी से भरा हुआ मैदान। सड़ांध की दुर्गन्ध का फैला हुआ समुद्र। कहीं बिना सिर का धड़ और कहीं बिना धड़ का सिर, कटे हुए हाथ, टूटी हुई जाँघें, चारों ओर स्यार, बगुले, गिद्ध और कुत्ते शवों को नोच रहे हैं।''

युद्ध की निरर्थकता सिद्ध करने के लिए तथा वर्णन कौशल की दृष्टि से 'पांचाली' उपन्यास का यह सर्वाधिक प्रभावशाली दृश्य है। आत्मकथात्मक शैली में लिखे गए इस उपन्यास में जगह-जगह मूर्त-अमूर्त बिम्बों, उपमाओं की सृष्टि के चलते भाषिक शुष्कता से काफी हद तक मुक्ति मिल सकी है। कुछ प्रयोग इतने सार्थक बन पड़े हैं कि उनकी चर्चा किए बिना उपन्यास की समीक्षा अधूरी मानी जाएगी। इन प्रयोगों का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है, क्योंकि लेखक ने इनके माध्यम से सड़ी-गली परम्पराओं को शास्त्रसम्मत सिद्ध करनेवाले कूढ़मगज ज्ञानियों पर जबर्दस्त प्रहार किया है। कहीं-कहीं अवश्य देशकाल के प्रति लेखक ने असावधानी बरती है। इसीलिए दस्तक, मजाल, पहल, फर्क जैसे शब्द भी उपन्यास में दिख जाएँगे। ऐसे ही 'राजसूय यज्ञ साम्राज्यवाद की एक घोषित विधि है' जैसे प्रयोग में साम्राज्यवाद शब्द खटकनेवाला है।

उपन्यास में लोकप्रचलित कथाओं का वर्णन

असंगत प्रतीत होता है। ऋषियों के आश्रम का वर्णन भी कमजोर है।

यदि हम स्त्री विमर्श की दृष्टि से उपन्यास का मूल्यांकन करें तो लेखक ने समाज के लिए यह सन्देश देना चाहा है कि ''आज पांचाली की हँसी को बचाने की आवश्यकता है।'' पांचाली की यह हँसी ओढ़ी हुई 'महानता' की पोल खोलती है। पांचाली अपनी हँसी का प्रयोग अस्त्र की तरह करती है। प्रभुवर्ग पर प्रहार के लिए आज हँसी रूपी अस्त्र का प्रयोग जरूरी हो गया है।

प्रगतिशील वसुधा से साभार

मुक्तिबोध और उनकी कविता

डॉ० बृजबाला सिंह

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-374-6
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 180.00

'मुक्तिबोध और उनकी कविता' डॉ० बृजबाला सिंह की नई पुस्तक है। इससे पूर्व मुक्तिबोध पर काफी कुछ लिखा जा चुका है। लेकिन बृजबाला सिंह की इस पुस्तक का महत्त्व इस बात में निहित है कि इसमें किसी भी वाद के पूर्वाग्रह से अलग एक संघर्षशील विचारक एवं चिंतक कवि के रूप में मुक्तिबोध का ईमानदारी से आकलन किया गया है। यह कहना ज्यादा सही होगा कि डॉ० बृजबाला सिंह ने अपनी इस पुस्तक में मुक्तिबोध की रचना-यात्रा के वस्तुनिष्ठ आकलन का सार्थक प्रयास किया है।

डॉ० बृजबाला सिंह ने अपनी पुस्तक की भूमिका में लिखा है—''तारसप्तक में मुक्तिबोध पहले कवि हैं और अज्ञेय अन्तिम, इस संयोग पर बड़ी गम्भीरता से सोचने की जरूरत है।'' डॉ० ब्रजबाला सिंह आगे लिखती हैं—''मुक्तिबोध की अनवरत विद्यमानता का कारण यह है कि वे कविता को एक गम्भीर निबन्ध मानते थे। वे प्रबन्धकार नहीं थे। सूक्ति और उक्ति से चौंकाने वाले 'हाइकू' या चौपदीकार भी नहीं हैं। पिता के बरगद और माँ के तुलसी के बिरवे की विराट सांस्कृतिक परम्परा में हाथ में गुलाब लिये हुए पर्वत-पर्वत, घाटी-घाटी विचरने वाले युवा अतिरेक भी नहीं हैं। उनकी कविता ऐसी नहीं है कि पढ़ते-सुनते ताली बजने लग जाय या सिर हिलने लगे। उनकी कविता ऐसे रचनाकार मनस्वी की कविता है जो सिर पकड़ कर समझते हुए पढ़ा जा सकता है। यह विलक्षणता मुक्तिबोध को लगातार तीन-चार दशकों से पाठकों और आलोचकों के बीच बराबर अलग तरह से रखे हुए हैं।''

डॉ० बृजबाला सिंह ने मुक्तिबोध और उनकी कविता से सम्बन्धित अपनी आलोचना को निम्नलिखित छह शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया है—'मुक्तिबोध के साहित्यिक विवेक की जमीन', 'अनुभव और अनुभूति', 'मुक्तिबोध का रचना कौशल', 'बिम्ब और प्रतीक', 'मुक्तिबोध का शब्द-कर्म' तथा 'अँधेरे में सृजन और सूजन कौतुक'। इन शीर्षकों के अन्तर्गत मुक्तिबोध के जीवन-दर्शन, रचनाधर्मी मानसिकता, लोकधर्मी दृष्टि और चिन्तन धारा के साथ-साथ उनकी रचना-प्रक्रिया तथा उनके साहित्य का बेबाक आकलन किया गया है।

नि:संदेह यह पुस्तक मुक्तिबोध और उनकी रचना-यात्रा पर एक ईमानदार कोशिश है। मुक्तिबोध के पाठकों तथा शोध-छात्रों के लिए तो यह महत्त्वपूर्ण है ही, वादमुक्त नजरिये से मुक्तिबोध को प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास भी है। यह पुस्तक डॉ० बृजबाला सिंह की प्रबुद्ध आलोचकीय समझ का एहसास भी कराती है।

—मिथिलेश्वर, *'लोकायत'* से

अघोरपंथ और संत कीनाराम

डॉ० सुशीला मिश्र

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-396-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 250.00

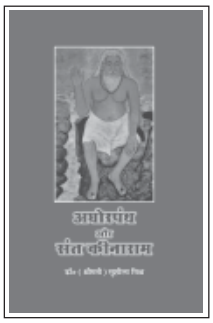

आप्टे के संस्कृत हिन्दी कोश के अनुसार 'अघोर' का शाब्दिक अर्थ है—जो भयानक न हो। शिव या शिव का कोई रूप। अघोर मार्ग से तात्पर्य है—शिव का अनुगमन करने वाला साधना मार्ग। ब्रिग्स ने शायद इसीलिए इनका सम्बन्ध योगियों से जोड़ा है। अघोर मार्गी ही कभी-कभी औघड़ हो जाते हैं। औघड़ कभी-कभी चमत्कार भी दिखाते हैं। औघड़ों को अघोरियों से अलग समझा जाता है। इनका दर्शन यह है कि संसार की कोई वस्तु घृणित नहीं है। इसलिए औघड़ भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान नहीं रखते। डॉ० (श्रीमती) सुशीला मिश्र ने संत कीनाराम का सम्बन्ध अघोर पंथ से स्थापित किया है। उनके अनुसार बाबा कीनाराम सच्चे अर्थों में मानवतावादी थे। उन्होंने—''समाज के दलित, प्रताड़ित व्यक्तियों को भी सम्मान दिया है। नारी समाज के प्रति भी यह उदार रहे हैं।''

लोक में संत कीनाराम द्वारा प्रदर्शित अनेक चमत्कारों को मान्यता प्राप्त है। इनमें सबसे अधिक चर्चित चमत्कार राजा चेतसिंह से सम्बद्ध हैं। लेखिका के अनुसार—''एक बार बाबा ने राजा से भोजन कराने को कहा। राजा ने गंगा में बहते शव को अपने सैनिकों से मँगाकर बाबा कीनारामजी के समक्ष रखवा दिया तथा भोजन करने को कहा। बाबा कीनारामजी ने अपनी चादर शव पर डाल दी, जिसे उठाने पर वहाँ थाली में सजे अनेक प्रकार के व्यंजन मिले जिन्हें खाकर बाबा कीनाराम वापस चले गये।'' दूसरा चमत्कार तो और भी आश्चर्यचकित करने वाला है। ''एक समय राजा चेतसिंह शिवाला में शिवलिंग की स्थापना करा रहे थे। पहरेदारों को आदेश दिया गया कि बाबा कीनाराम को अन्दर न आने दिया जाय। वैदिक ब्राह्मणों द्वारा वेदपाठ हो रहा था। संत कीनाराम गदहे पर चढ़कर वहाँ पहुँचे। उनका महारौद्र रूप था। वहाँ उनका अपमान हुआ। बाबा कीनाराम ने ब्राह्मणों को सम्बोधित करते हुए कहा—''लोलुप! ठग विद्या का आश्रय लेने वालों! उदर निमित्त ईश्वर और अपने धर्म से विमुख ब्राह्मणों! देखो, मेरा गदहा वेद बोल रहा है।'''' बाबा ने गदहे का कान ऐंठ कर मारा और गदहा वेद बोलने लगा।'' ये चमत्कार लोक प्रचलित हैं।

बाबा कीनाराम का जन्म तो चन्दौली तहसील (अब जिला) के 'रामगढ़' में हुआ था। इन्होंने दीक्षा वाराणसी के अघोरपंथी साधक बाबा कालूराम से ली थी। लेखिका ने बड़े श्रम से अघोर पंथ की पूरी परम्परा का उल्लेख किया है।

उपसंहार सहित कुल ग्यारह अध्यायों में लेखिका ने इस पंथ से सम्बन्धित जो कुछ ज्ञातव्य है उसका सन्तुलित और समुचित अध्ययन प्रस्तुत करके निश्चय ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। पाश्चात्य विद्वानों में डब्ल्यू क्रुक के अतिरिक्त ब्रिग्स ने इस सम्प्रदाय का उल्लेख किया है। उन्होंने हरिद्वार और बम्बई में भी अघोरपंथियों की उपस्थिति दर्ज की है।

लेखिका ने नारी जाति के प्रति संत कीनाराम की उदारता का उल्लेख करके नारी-विमर्श के सूत्रों को प्राचीनतर प्रमाणित किया है। इसे हम एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मान सकते हैं।

लेखिका ने लगभग 200 पृष्ठों के अपने शोध-प्रबन्ध में पहली बार अघोरपंथ का प्रामाणिक वृत्त, विचारधारा, और रचनात्मक सौन्दर्य का आकलन करके हम पाठकों का बड़ा उपकार किया है। हम पूरे मन से लेखिका के इस महत्त्वपूर्ण कार्य का स्वागत करते हैं। इसके प्रकाशक भी साधुवाद के पात्र हैं।

—डॉ० रामचन्द्र तिवारी, गोरखपुर

विष्णु प्रभाकर के 94वें जन्मदिन पर फिल्म का प्रदर्शन

हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर के 94वें जन्मदिन पर राजधानी में उन पर बनी एक डाक्यूमेंटरी फिल्म का प्रदर्शन किया गया। युवा फिल्म निर्माता संजय जोशी ने 21 जून 1912 को जन्मे श्री प्रभाकर के साहित्यिक योगदान पर (युग सृष्टा प्रभाकर) नामक डाक्यूमेंटरी फिल्म बनायी है। फिल्म की अवधि करीब एक घण्टे की है। फिल्म में पद्मभूषण से सम्मानित श्री प्रभाकर के बचपन, शिक्षा, दिल्ली प्रवास और उनके जीवन संघर्ष को चित्रित किया गया है। यह फिल्म हिन्दी प्रसिद्ध कहानीकार पंकज विष्ट द्वारा श्री प्रभाकर से लिए गये साक्षात्कार पर आधारित है। गाँधीवादी मूल्यों में आस्था रखने वाले विष्णु प्रभाकर को साहित्य अकादमी पुरस्कार, मूर्तिदेवी पुरस्कार, श्लाका सम्मान, सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया है।

2005 में प्रकाशित पुस्तकें

उपन्यास

सूर्यवंश का प्रताप	*राजेन्द्रमोहन भटनागर*	180.00
एक था फेंगाड्या	*अरुण गद्रे*	175.00
झुण्ड से बिछड़ा	*विद्यासागर नौटियाल*	80.00
धुआँ और चीखें	*दामोदरदत्त दीक्षित*	190.00
आंगलियात	*जोसेफ मेकवान*	100.00
समय से आगे	*सीताराम झा 'श्याम'*	250.00
सुन्नर पांडे की पतोह	*अमरकान्त*	125.00
पत्ताखोर	*मधु कांकरिया*	225.00
दशक्रिया	*बाबा भांड*	225.00
आँधी	*गुलज़ार*	125.00
खुशबू	*गुलज़ार*	125.00
चन्द्रमुखी	*विश्वास पाटिल*	350.00
खुदा सही सलामत है	*रवीन्द्र कालिया*	425.00
भारतमाता ग्रामवासिनी	*कमलेश्वर*	175.00
ख़ानबदोश	*अहमद फ़राज़*	295.00
पहाड़ चोर	*सुभाष पन्त*	350.00
वनफूल	*डॉ० रमानाथ त्रिपाठी*	275.00
अनबीता व्यतीत	*कमलेश्वर*	125.00
कुकुर नक्षत्र	*अखिलेश*	195.00
कैबरे डान्सर	*आबिद सुरती*	200.00
खबर की औकात	*बच्चन सिंह*	300.00
दरार	*रामावतार*	200.00
हसीना मंजिल	*उषाकिरण खान*	125.00
एक और विभाजन	*महाश्वेता देवी*	150.00
और यात्राएँ	*गोविन्द मिश्र*	150.00
बाजत अनहद ढोल	*मधुकर सिंह*	150.00
सल्तनत को सुनो, गाँव चलो	*जयनंदन*	175.00
चकोरी	*इन्दु मज़लदान (अनु.)*	200.00
पासंग	*मेहरून्निसा परवेज़*	450.00
कातर बेला	*देवेश ठाकुर*	150.00
जंगल के जुगनू	*देवेश ठाकुर*	150.00
न भूतो न भविष्यति	*नरेन्द्र कोहली*	595.00
देहगाथा माधवी की	*यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र'*	175.00
ठीकरे की मंगनी	*नासिरा शर्मा*	199.00

कहानी

सिंहासन बत्तीसी	*डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव*	120.00
धूर्ताख्यान	*श्री हरिभद्र सूरि*	40.00
कालातीत	*विवेकी राय*	100.00
गूँगा जहाज	*विवेकी राय*	120.00
अब्बू ने कहा था	*चन्द्रकान्ता*	90.00
परिन्दे का इन्तज़ार सा कुछ	*नीलाक्षी सिंह*	150.00
फ़सादात के अफ़साने	*ज़बैर रज़वी*	325.00
ब्रह्महत्या तथा अन्य कहानियाँ	*शशिभूषण द्विवेदी*	90.00
पंचतंत्र की कहानियाँ (सम्पूर्ण)	*रामप्रताप त्रिपाठी*	300.00
दुखियारी लड़की	*तसलीमा नसरीन*	125.00
छोटे छोटे दुःख	*तसलीमा नसरीन*	300.00
ममता कालिया की कहानियाँ (खण्ड-1)	*ममता कालिया*	400.00
पानी के निशान	*डॉ० विक्रम सिंह*	100.00
प्रति श्रुति : श्रीनरेश मेहता की समग्र कहानियाँ	*संक० : अनिलकुमार*	250.00
सोनाली गाथा तथा अन्य कहानियाँ	*पुष्पा देवड़ा*	100.00
उस सदी की बात	*कल्पना कुलश्रेष्ठ*	80.00
आधी छुट्टी का इतिहास	*राजकुमार गौतम*	50.00
मनुष्य-चिह्न तथा अन्य कहानियाँ	*हिमांशु जोशी*	125.00
मंजुल भगत : समग्र कथा-साहित्य	*संक०-संपा० : कमलकिशोर गोयनका*	600.00

नाटक

धर्मगुरु	*स्वराजबीर*	125.00
युगान्त	*महेश एलकुंचवार*	150.00
चरन दास चोर	*हबीब तनवीर*	75.00
बहादुर कलारिन	*हबीब तनवीर*	100.00
गाँव के नाँव ससुरार मोर नाँव दमाद	*हबीब तनवीर*	75.00
आगरा बाज़ार	*हबीब तनवीर*	100.00
जहरीली हवा	*हबीब तनवीर*	125.00
ओह अमेरिका	*दयाप्रकाश सिन्हा*	75.00
इतिहास-चक्र	*दयाप्रकाश सिन्हा*	95.00
अपने अपने दाँव	*दयाप्रकाश सिन्हा*	125.00

हास्य व्यंग्य

यथा समय	*शरद जोशी*	190.00
आयोग (समग्र व्यंग्य-5)	*नरेन्द्र कोहली*	300.00
उस देश का यारो क्या कहना!	*मनोहरश्याम जोशी*	250.00

कविता / ग़ज़ल

यथा कहो कविता	*दिनेशकुमार शुक्ल*	75.00
कोई शीर्षक नहीं	*वास्वावा शिम्बोर्स्का*	395.00
हवा में हस्ताक्षर	*कैलाश वाजपेयी*	150.00
गीतिमाला	*रामविलास शर्मा*	100.00
यह वह या फिर कुछ और	*जुडिथ हेत्ज़बर्ग*	100.00
वर्षा आए तो	*मनोरमा बिश्वाल महापात्र*	100.00
आवाज़ का रिश्ता	*कुलदीप सलिल*	150.00
उम्मीद का दूसरा नाम	*अशोक वाजपेयी*	75.00
है तो है	*दिप्ती मिश्र*	150.00
सोने की सिकड़ी / रूपा की नथिया	*सत्यप्रकाश चौधरी*	125.00
परछाई की खिड़की से	*राजुला शाह*	75.00
पाकिस्तान की शायरी	*श्रीकांत / शहरोज़*	250.00
कुछ पल साथ रहो	*तसलीमा नसरनी*	125.00
आषाढ़स्य प्रथम दिने	*नारायण सुमंत*	80.00
सोने की सिकड़ी रूपा की नथिया	*पद्मश्री चित्तू टुडू/सत्यप्रकाश चौधरी, शिवशंकर सिंह पारिजात*	125.00
रजनी-दिन नित्य चला ही किया	*हजारीप्रसाद द्विवेदी संकलन एवं सम्पा० : मुकुंद द्विवेदी*	160.00
रंगे ग़ज़ल	*ओमप्रकाश शर्मा*	150.00
बज़्मे-ग़ज़ल	*ओमप्रकाश शर्मा*	150.00

आलोचना

धर्मवीर भारती का साहित्य	*डॉ० गरमीत सिंह*	150.00
बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य	*दामोदरदत्त दीक्षित*	190.00
निराला के सृजन सीमान्त : विहग और मीन	*अर्चना वर्मा*	250.00
आलोचना समय और साहित्य	*रमेश दवे*	150.00
भारतीय साहित्य के निर्माता राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'	*वीरभारत तलवार*	25.00
भारतीय साहित्य के निर्माता 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल'	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	25.00
भारतीय साहित्य के निर्माता 'नरेन्द्र शर्मा'	*हरिमोहन शर्मा*	25.00
भारतीय साहित्य के निर्माता 'अमृतराय'	*रणजीत साहा*	25.00
हिन्दी गद्य : इधर की उपलब्धियाँ	*पुष्पाल सिंह*	225.00
एवम् निराला	*डॉ० भवदेव पाण्डेय*	275.00
समकालीन कविता का बीजगणित	*प्रो० कुमार कृष्ण*	150.00
पंचनाद	*शमीम शर्मा*	395.00
हिन्दी काव्य संवेदना का विकास	*डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी*	250.00
अशोक बनाम वाजपेयी : अशोक वाजपेयी	*डॉ० धर्मवीर*	95.00
गोरखनाथ : नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में	*डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय*	250.00
संत रज्जब	*डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय*	150.00
कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	200.00
हिन्दी नवजागरण	*डॉ० गजेन्द्र पाठक*	200.00

जीवन चरित / आत्मकथा

कहानी एक नेताजी की	*श्रवणकुमार गोस्वामी*	200.00
समर्थ रामदास	*ना०वि० सप्रे*	50.00
प्रकाश पथ का यात्री	*योगेश्वर*	160.00
सारस्वत बोध के प्रतिमान : आचार्य रामचन्द्र तिवारी	*डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय*	250.00
भये कबीर कबीर	*डॉ० शुकदेव सिंह*	250.00
भारत के महान योगी (भाग-11-12)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	150.00

भारत के राष्ट्रपति *डॉ० भगवतीशरण मिश्र* 150.00
कमलेश्वर : मेरे हमसफर *गायत्री* 150.00
दशक्रिया *बाबा भांड* 225.00
कूड़ा-कबाड़ा *अजीत कौर* 125.00

राजनीति / इतिहास

महाशक्ति भारत *डॉ० वेदप्रकाश वैदिक* 225.00
मेरा भारत *खुशवंत सिंह* 600.00
पश्चिमी भौतिक संस्कृति का उत्थान और पतन *डॉ० रघुवंश* 200.00
चीन का इतिहास *प्रो० सी०ई० जीनी* 200.00
इतिहास दर्शन एवं संस्कृति *डॉ० प्रकाशनारायण सिन्हा* 695.00
मुगल सम्राट हुमायूँ *हरिशंकर श्रीवास्तव* 150.00
भारत का सामाजिक आर्थिक विकास (1758-1947 ई०) *डॉ० सतीशचन्द्र मित्तल* 250.00
मुगलों की धार्मिक नीतियाँ : राजपूत-समुदाय और दक्खिन *सतीशचन्द्र* 000.00
उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर *डॉ० अशोककुमार सिंह* 300.00
रहबरी के सवाल *चन्द्रशेखर* 350.00
महाशक्ति भारत *वेदप्रताप वैदिक* 550.00

समाजशास्त्र / समाज विज्ञान

हिन्दू मुस्लिम रिश्ते : नया शोध, नये निष्कर्ष *आशुतोष वार्ष्णेय* 495.00
सामाजिक सरोकार : बहुआयामी साहित्य *मन्मथनाथ गुप्त* 495.00
सफाई कामगार समुदाय *संजीव खुदशाह* 150.00
कट्टरता के दौर में *अरुणकुमार त्रिपाठी* 350.00
गुजरात : हादसे की हक़ीक़त *सिद्धार्थ वरदराजन* 425.00
दस्तावेजी समाज विज्ञान *सलाम आज़ाद* 200.00

अर्थशास्त्र

जी वित्त मंत्रीजी *प्रकाश बियाणी* 200.00

पत्रकारिता

चौथे स्तम्भ की चुनौतियाँ *डॉ० लालचन्द गुप्त* 140.00
हरसूद 30 जून *विनयमोहन तिवारी* 225.00
सम्प्रेषण और रेडियो शिल्प *विश्वनाथ पाण्डेय* 250.00
समपूर्ण पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* सजि. 400.00
अजि. 150.00

शिक्षाशास्त्र

नवीन शिक्षा मनोविज्ञान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* सजिल्द 250.00, अजिल्द 150.00
शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार *डॉ० के०पी० पाण्डेय* सजिल्द 250.00
अजिल्द 150.00
Fundamentals of Educational Research *Dr. K.P. Pandey* [H.B.] 450.00
[P.B.] 250.00

काव्य

सूरसागर (सम्पूर्ण पाँच खण्डों में) *डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 2500.00

धर्म-दर्शन

श्रीमद्एकनाथी भागवत *ना०वि० सप्रे* 600.00

बिहार

स्वर्ग पर धावा-बिहार में दलित आन्दोलन (1912-2000 ई०) *प्रसन्नकुमार चौधरी* 450.00
बिहार में चुनाव : जाति हिंसा और बूथ लूट सजि. 250.00
श्रीकांत अजि. 125.00
बिहारी देखने वालों की आँख में है *विजय नाम्बिसन* 300.00
बिहार में निजी सेनाओं का उद्भव और विकास *कुमार नरेन्द्र सिंह* 350.00

साहित्य शास्त्र

भारतीय काव्यशास्त्र *डॉ० हरिश्चन्द्र* 130.00

भाषा शास्त्र

मानक हिन्दी का व्यवहारपरक व्याकरण *रमेशचन्द्र मेहरोत्रा* 250.00

प्रबन्धन

प्रबंधन के गुरुमंत्र *सुरेश कांत* 175.00
उत्कृष्ट प्रबंधन के रूप *सुरेश कांत* 175.00
सफल प्रबंधन के गुर *सुरेश कांत* 175.00

आहार विज्ञान

निरामिष आहार दर्शन *जगदीश्वर जोहरी* 200.00

विविध

हरसूद, 30 जून *विजयमनोहर तिवारी* 225.00
कट्टरता के दौर में *अरुणकुमार त्रिपाठी* 350.00

पटकथा

आँधी *गुलज़ार* 125.00
खुशबू *गुलज़ार* 125.00

पर्यावरण

पर्यावरणीय प्रदूषण *डॉ० विष्णुदत्त शर्मा* 250.00
पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 150.00

स्त्री-विमर्श

संभवामि *आशारानी व्होरा* 150.00

धूर्त्ताख्यान

रचनाकार
आचार्य हरिभद्र सूरि
अनुवादक-सम्पादक
डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN :
81-902534-4-1
अनुराग प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 40.00

पाँच धूर्तों की अद्वितीय कथा

भारतीय व्यंग्यकाव्यों में 'धूर्त्ताख्यान' (प्रा. 'धुत्तक्खान') का अद्वितीय स्थान है, इस काव्य के रचयिता आचार्य हरिभद्र सूरि हैं, जो ईसा की आठवीं-नवीं शती के श्रमण परम्परानुयायी प्रकाण्ड प्रतिभाशाली श्वेताम्बर जैन आचार्यों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। प्राकृत के सर्वप्रिय छन्द 'गाथा' में निबद्ध यह व्यंग्यात्मक काव्य पाँच आख्यानों में विभक्त है।

कथा कहने की विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न आचार्य हरिभद्र ने 'समराइच्चकहा' (समरादित्य-कथा) जैसी एक अन्य अद्भुत गद्यकथा की भी रचना की है, जो बहुत अंशों में ईसा की तीसरी-चौथी शती के अद्वितीय कथाकार आचार्य संघदासगणी की प्राकृत-गद्यकथा 'वसुदेवहिण्डी' में परिगुम्फित पौराणिक मिथकीय तथा निजन्धरी (लीजेण्ड्स) कथाओं के परवर्ती विकास का सारस्वत साम्य उपस्थित करती है, किन्तु 'धूर्त्ताख्यान' में इस विचक्षण कथाकोविद रचनाकार ने ब्राह्मण-परम्परा के पुराणों तथा रामायण-महाभारत जैसे महाकाव्यों की मिथकीय चेतनावाली रूढ़ कथाओं की अप्राकृतिक, अवैज्ञानिक और अबौद्धिक मान्यताओं और प्रवृत्तियों का अपनी व्यंग्यविद्ध कथाओं के माध्यम से निराकरण उपन्यस्त किया है।

धूर्त्ताख्यान की कथावस्तु अतिशय सरल और प्रांजल है। इसमें पाँच धूर्तों की कथा है। प्रत्येक धूर्त असम्भ, अबुद्धिगम्य और काल्पनिक कथा कहता है, जिसको दूसरा धूर्त साथी रामायण, महाभारत, विष्णुपुराण, शिवपुराण आदि ग्रन्थों के समातर कथा-प्रमाण उद्धृत कर अपना समर्थन देता है। अन्तिम पाँचवीं कथा की धूर्त्त स्त्री कहती है और वह कथा कहने की प्रक्रिया बदल देती है। वह अपने जीवन की अनुभव कथा तो सुनाती ही है और स्वयं ही पौराणिक आख्यानों से उसका समर्थन भी करती है।

आचार्य हरिभद्र ने पुराणों की कथा-कल्पना को मिथ्याभ्रान्ति मान कर उनका व्यंग्यात्मक शैली में निराकरण करने में अक्खड़ पाण्डित्य और अद्भुत मेधा का परिचय दिया है। शैली की दृष्टि से भारतीय कथा-साहित्य में यह ग्रन्थ मूर्द्धन्य है।

— '*प्रभात खबर*, राँची' से

विश्वविद्यालय वार्ता

प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुष्प

सम्पादक

डॉ० हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी

प्रकाशक

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

प्रथम पुष्प के 'नान्दी वाक्' में कुलपति अभिराज राजेन्द्र मिश्र का कथन है—''सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के भौतिक स्वरूप का अर्थ है उसका परिसर एवं परिसर में बने विविध भवनादि, परन्तु इस विश्वविद्यालय का जो वाङ्मय स्वरूप है, उसी की अभिव्यक्ति है।'' विश्वविद्यालय संस्कृत, संस्कृति और शिक्षा का केन्द्र है, इसकी समस्त गतिविधि-अध्ययन, अध्यापन, गोष्ठी, वार्ता आदि का विस्तृत विवरण विश्वविद्यालय की सारस्वत-संस्करणमाला में है।

विश्वविद्यालय वार्ता के द्वितीय तथा तृतीय पुष्प विश्वविद्यालय में आयोजित 42वें अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन विशेषांक है।

'विश्वविद्यालय वार्ता' विषय और मुद्रण, प्रकाशन सभी दृष्टियों से भव्य, नयनाभिराम, पठनीय तथा सराहनीय है। यह विश्वविद्यालय के भौतिक परिवेश के साथ आन्तरिक परिवेश को भी अभिव्यक्त करती है। सामान्यत: विश्वविद्यालयों का प्रकाशन विभाग निष्क्रिय होता जा रहा है। संस्कृत विश्वविद्याय सारस्वत कार्यक्रमों तथा प्रकाशनों से अपनी विशिष्टता बनाये हुए है। देश-विदेश में इसके सारस्वत ग्रन्थों के पाठक हैं। इसका स्वागत है।

शब्द छवि

सहस्राधिक हाइकु कविताएँ / ऋचाएँ

नलिनी कान्त

प्रकाशक : कविताश्री प्रकाशन, उत्तर बाजार

अण्डाल-713 321

मूल्य : 50.00

तीन पंक्तियों में बिखेरती शब्द छवि अत्यन्त मनोरम और भाव प्रवण है।

सौ सौ कमल / भींगे झील सी आँखें / खुली-खुली-सी। 41 खंडों में विभिन्न विषयों और भावों की पंक्तियाँ सचमुच ऋचा ही प्रतीत होती हैं।

कलरव

चतुर्मासी पत्रिका

सम्पादक

हेम भटनागर

18 चित्र विहार, देहली-110 092

पत्रिका क्यों ?—''बात जो मन में उमड़ती रहती है, मन विरोध करता रहता है, मन करता है किसी के साथ विचार बाँटें।''

पत्रिका में लेख, कविता, कहानी, बाल रचनाएँ, आवरण हाथ से चित्रित।

सहकार

अनियतकालीन

सम्पादक

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

362, सिविल लाइन्स, उन्नाव

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **जून-जुलाई 2005** **अंक : 6-7**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com

Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082